Postal Registration No. CHD/0101/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 14 अंक 01 30 जनवरी, 2015 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

गुदड़ी के लाल -सर छोटू राम

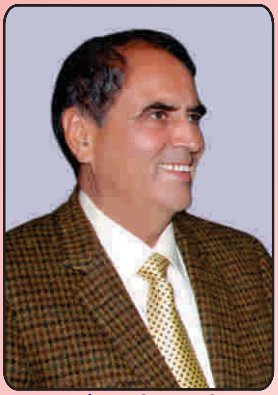

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

छोटू से सर छोटू राम और दीन बंधु का सफर कड़ी मेहनत, दूरदृष्टि और साफगोई से तय हुआ। आज उन्हे गरीबों के मसीहा के तौर पर जाना-पहचाना जाता है क्योंकि उन्होने समाज के मर्म को पहचाना और दरिद्र नारायण की सुध ली। वे सदैव कहते थे कि किसान अपने परिवार तक सीमित ना रहकर हर जाने-अनजाने हेतू अन्न की पैदावार करता है। हर एक की चिंता और गम उसके हैं, मौसम की मार, कीड़े मकौड़े की मार के साथ-साथ कर्ज, मर्ज और गर्ज को सहते हुए अनाज की पैदावार करता है और कठिन परिश्रम के बावजूद खुद उसका परिवार ही भूखा रह जाता है।

किसान की इसी मर्म को पहचानते हुए सर छोटू राम ने उसका साथ देने की पहल की। उसे कर्ज से बचाने हेतू ऋण मुक्त करते हुए सहकारिता कृषि को जन्म दिया, खेत को पानी हेतू भाखड़ा बांध की सोची जो बाद में आधुनिक भारत का मंदिर कहलाया। कृषक के बच्चे की पढ़ाई हेतू बजाहत की ताकि वे ज्ञानवान होकर संसार से अपने हक के लिए लड़ सकें और उसके अच्छे जीवन हेतू खेती में विभिन्नता जैसे की पशुपालन, मधुमक्खी पालन, बागवानी इत्यादि के सुझाव दिए। काणी डंडी, काणे बाट का विरोध किया। जिसमें कर्ज देते वक्त किसान को 30 सेर अनाज देकर 40 सेर लिखा जाता था और वापसी के वक्त 50 सेर वापिस लिया जाता था। कृषक की बहबूदगी हेतू उसे भर्ती होने तक की बजाहत की और प्रेरणा देते हुए कहा कि भर्ती हो जा रे रंगरूट, आड़े मिलै तनै टूटे जूते उड़े मिलेगें बूंट। सब कुछ करने सहने के बावजूद भी किसान दरिद्र नारायण ही रहता है क्योंकि उसके उत्पाद की कीमत कोई और तय करता है जिसे उसकी सुख सुविधा से कोई दरकार नहीं बल्कि कई तो ऐसे भी मिलेगें जिन्हे गेहूं और गन्ने की फसल की पहचान भी नहीं है। उन्होने माना कि अन्दाता की कोई पहचान नहीं है जबकि वह भगवान और मां दोनों की भूमिका बखूबी निभा रहा है। संत कबीर दास ने कहा था ''कबीरा खड़ा बाजार में सबे की मांगे खैर, ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर'' अपने काम से मतलब फसल की सफलता हेतू सदा आसमान की ओर देखता है। हाल ही में बरसात इतनी हो गई कि आलू, मटर और सरसों, तथा चने इत्यादि की फसलें तबाह हो गई जिससे किसान की कोई क्षति-पूर्ति नहीं कर सकता लेकिन यह सब्र का देवता आज भी मौन मुद्रा में सब कुछ सहन कर रहा है और बची फसल के लिए सफलता हेत भगवान से तरस खाने की दुआ मांगता है। आज अगर सर छोटू राम जिंदा होते तो किसान के इस दुख में भागीदार होते और उसको राहत हेतू व्यवस्था करवाते इसीलिए आज किसान इस मसीहा को पुकार रहा है कि वे किसी कब्र से उठकर उसके दर्द की मरहम की व्यवस्था करवाए। उसे भावी कर्ज-मर्ज और गर्ज के चर्क से बचाए अन्यथा वे बेमौत मारा जाएगा, आत्म हत्याएं करने को मजबूर होगा।

दीन बंधू ने कुदरत के कहर से बचाने हेतू तकावी ऋणों की व्यवस्था करवाई थी और बाद में दोनों को छुटकारा दिलाने हेतू पानी की व्यवस्था। इससे सरकार और किसान दोनों लाभांवित हुए थे। सजलुज नदी पर बांध बनाने से अकाल और बाढ़ दोनों से राहत मिली तथा जरूरत के वक्त खेत के लिए पानी की व्यवस्था भी हुई। सर छोटू राम ने पहल तो कर दी थी अब इसे बनाए रखना समाज का कर्त्तव्य है। दिसंबर 15, 1930 को यह सदन के पटल पर रख दिया गया हालांकि तब तक बहुत सा पानी बह चुका था और बांध की लागत बढ चुकी थी क्योंकि इसकी योजना 1915 से 1925 के बीच हुए सर्वे पर आधारित थी जिसमें बार-बार रोड़े और अटकलें आ रही थी। दीन बंधू ने यह सभी अटकलें बाधाएं अपने तेज दिलो दिमाग से पार कर ली। तत्कालिन सरकार द्वारा खड़ी की गई बाधाएं, महाराज बिलासपुर के क्षेत्र की बांध के पानी के नीचे आने वाली भूमि तथा किसानों की क्षति, सिंध क्षेत्र को 6 करोड़ का मुआवजा शामिल थी। दीन बंधु ने सिरसा सहकारी फार्म में पैदा हुई कपास का जिक्र करते हुए बताया कि क्षेत्र की भूमि बहुत उपजाउ है और पानी के बिना प्रति एकड़ कपास का उत्पादन 27 मन के करीब था और पानी की उपलब्धता से यह 40 मन हो गया। सर छोटू राम ने सदन को बताया कि इस हिसाब से बार-बार अकाल की स्थिति पर सरकार द्वारा किए जाने वाले खर्चे जो कि केवल गुड़गांवा क्षेत्र में 42 लाख रूपये वार्षिक औसतन तकावी ऋण थे, सदा-सदा से निजात के साथ-साथ क्षेत्र का विकास सम्भव हो सकेगा। केवल किसान ही नहीं, वाणिज्य में भी प्रगति होगी और क्षेत्र विकास के नए-नए आयाम कायम करेगा। सर छोटू राम की मेहनत रंग लाई, बांध बनना शुरू हो गया। आधुनिक भारत का मंदिर कहलाने वाले भाखड़ा बांध तैयार हुआ जिससे सिंचाई के साथ-साथ

शेष पेज-2 पर

'k"k i`t &1

बिजली उत्पादन भी हो रहा है जिससे देश के कई कल कारखाने चल निकले। हालांकि इस सपने को साकार करने वाला तब तक इस नश्वर संसार को छोड़कर जा चुका था लेकिन उनकी स्मृति की सुगधं चारों ओर फैल गई। बांध की उंचाई भी बढ़ाई गई ताकि कृषि हेतू बढ़ रहीं पानी की जरूरत को बढाया जा सके। किसान ने भी इसका सिला पूरी मेहनत से दिया और 'हरित क्रांति' का बीज बोकर फसल उत्पादन दोगुणा कर दिया।

आज जैविक खेती को बढ़ावा देने की बातें हो रही है, किसान उन्हे मान भी रहा है। सफलता मिली तो समाज और किसान दोनों लाभांवित होगें। आज कृषि में जागरूकता और विभिन्नता दोनों आई हैं जिसकी उन्होने कल्पना की थी। इसे मूर्त रूप देना ही उस महान विचारक को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। किसान का सब्र ही बहुत बड़ा हथियार है क्योंकि यही उसे गिरने नहीं देता ना किसी के कदमों में और ना नजरों में, इसीलिए किसान तो खेत के मेड़ पर बैठकर कबीर जी की तरह सबकी खैर मांगता रहा है और मांगता रहेगा, उसके दर्द की मरहम हेतू आज किसी दूसरे छोटू राम की जरूरत है अन्यथा अंग्रेजों के जमाने में मालिया बढ़ जाने से किसानी से बेमुख ना हो जाएं। इससे हरेक को नुकसान ही होगा, किसी को कुछ राहत मिलने की कोई संभावना नहीं है।

कृषि भूमि किसान की रोजी रोटी का एक मात्र साधन है। गरीब किसान-मजदूर के मसीहा सर छोटूराम इस तथ्य से भली भांति अवगत थे। पूर्व की संप्रसंग सरकार ने एस ई जैड के नाम किसानों की जमीन हड़पने तथा उन्हे खुदकशी करने पर मजबूर करने के लिए पूंजीपतियों की एक नई बिरादरी उभर कर सामने आई और इस में सरकारों तथा उच्च कोटी के सरमाएदारों की मिलीभगत प्रतीत हुई। अतः किसान दर्द से कहराता है और छटपटाता है लेकिन आज भी उसके दर्द को ना तो कोई समझने वाला है न ही उस के दर्द की कोई दवा। इसलिए दीनबंधु ने 6 दसक पूर्व डा0 सर इकबाल के शब्दों में यह कहा था कि ''इकबाल कोई महरम अपना नहीं जहां में, मालूम क्या किस को दर्दे निहां हमारा।'' उन्होने कभी मंदिर, मस्जिद में पूजा अर्चना को अधिमान नहीं दिया बल्कि अपने प्रकृति प्रेम का ज्वलंत उदाहरण अपना जन्म दिन 'बंसत पंचमी' को मना कर दिया। उनका मानना था कि किसान की सभी आशाएं व त्योहार कृषि से जुड़े हैं। किसान का जीवन जितना जटिल है उसका बर्ताव उतना ही सरल है वह कभी अपनी परिवार की चिंता नहीं करता। सब कुछ राम भरोसे छोड़ सख्त मेहनत पर जुटा रहता है। गीता का उपदेश ''कर्म किए जा फल की इच्छा मत कर'' को ही लक्ष्य मानकर हल का सिपाही सख्त मेहनत करते हुए जीवन गुजार देता है। सर छोटूराम के जीवन काल में किसान की आर्थिक दशा बहुत दयनीय थी उपर से साहूकार की धांधली कृषक समाज को बेड़ियों में जकड़ कर रखती थी।

चौधरी छोटूराम ने किसान की दशा उसी समय भांप ली थी तथा उसे अपने बच्चों को पढ़ाने लिखाने की प्रेरणा दी। मेधावी छात्रों को वे अपने खर्चे पर भी पढ़ाने का प्रयास करते रहे इसलिए उन्होने 'किसान कोष' की सूरत में एक 'वजीफा कोष' भी लाहौर में स्थापित किया था। पाकिस्तान के एक मात्र नोबल पुरूस्कार विजेता अब्दुस कलाम उसी वजीफे से पढ़े थे। पुरूष्कार जीतने पर उन्होने स्वंय कहा था कि अगर छोटूराम ना होता तो अब्दुस कलाम आज इस मुकाम पर ना होता। चौधरी छोटूराम जैसी बहुमुखी प्रतिभा को हमें आज के संदर्भ में समझना-देखना होगा। जब तक उनकी विचार धारा युवा वर्ग में पूर्णतः जागृत नहीं होगी तब तक उनकी ग्रामीण क्रांति या महात्मा गांधी का पूर्णस्वराज भारत में नहीं आ सकता। हम सबका प्रयास होना चाहिए कि दीन बंधु की विचारधारा का सफर मानसिक स्तर पर तीव्र गति से चले ताकि 'ग्राम स्वराज' का लक्ष्य पूरा हो सके। महान व्यक्ति अपने समय में युग प्रवर्तक होते हैं तथा आगामी युगों की आधारशिला रखते हैं। चौधरी छोटूराम ऐसे ही एक युग पुरूष थे जिन्होने कृषि क्रांति का सुत्रपात किया। आधुनिक चेतना के वे सुत्रधार थे। किसान के हितों की वकालत करते हुए वे वायसराय तक भिड़ गए।

चौ0 छोटूराम का जीवन उड़ते बालू-कण और पतझड़, शोषण और पीड़ा से ग्रस्त कृषक समाज के उद्धारक के रूप में ही गुजरा क्योंकि उन्होने स्वंय यह सब कुछ भोगा तथा महसूस किया था। उन्होने मुंशी प्रेमचंद के पात्र 'होरी' गोबर और धनियां की पीड़ा का अनुभव किया था, आश्वासनों पर विश्वास नहीं किया बल्कि एक क्रांति दूत बनकर उभरा। वे हमेशा कहते थे ''नहीं चाहिए मुझे ये मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।'' चौ0 छोटूराम सदी की रक्तहीन क्रांति के सुत्रधार बने जिसके द्वारा उन्होने शोषित किसान को सेठ-साहूकारों के चुंगल से छुड़ाया। दीन बंधु सर छोटू राम महिला विकास, सुरक्षा के साथ-साथ उनकी शिक्षा व सम्मान के सदैव पक्षधर रहे। एक बार रोहतक के पास खाप पंचायतों ने मिलकर आग्रह किया कि आपके सुपत्र नहीं है इसलिए आप दूसरी शादी करवा लो तो उन्होने उनको लताड़ते हुए कहा कि जब समस्त भारत के नर-नारी उनके सुपत्र-सुपुत्रियां हैं तो दूसरी शादी क्यों करवांऊ।

दीन बंधु सर छोटूराम ने अपने जीवन काल में ही बढ़ रहे प्रदूषण पर आशंका जताई थी तथा वातावरण संरक्षण हेतू सरकार को चेताया था। उन्होने उद्यमकर्ताओं को आह्वान किया था कि वे सरकार से मिलकर वातावरण संरक्षण की योजना बनाएं। जनता को भी जागरूक करने पर उन्होने किसानों को खेत को तीन भागों में बांटने को कहा था कि एक भाग में खेती, चारा और वृक्षों तथा तीसरे हिस्से में पशुपालन रखने से वातावरण का संरक्षण भी होगा तथा पोषित विकास संभव होगा। आज वैज्ञानिकों को इसकी सुध आई है। समय रहते उचित पग उठाए होते तो आज ओजोन लेयर को क्षति नहीं पहुंचती और इंसान भंयकर बिमारियों से बचा रहता। वे सादा खाते, सादा पहनते थे ताकि जनता उनका अनुशरण कर निरोगी जीवन व्यतीत कर सके।

दीनबंधु की राजनैतिक यात्रा भी अनूठी थी। वे सन् 1923 में पहली बार रोहतक (दक्षिण-पूर्वी ग्रामीण क्षेत्र) से पंजाब विधानपरिषद के सदस्य बने और राजनीतिक पारी शुरू की। सन् 1924 में उन को चौधरी लालचंद के स्थान पर पंजाब मंत्रीमंडल में शामिल किया गया जो उनके महापुरूष बनने की दिशा में प्रथम कदम था। पंजाब विधान सभा में गैर-कृषक सदस्यों के कड़े विरोध के बावजूद उन्होने किसान समुदाय के हित को आगे

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 jat girl 25/5'.3½" M.Tech. Computer Science. Working as Assistance Professor in NIT, Kurushetra, salary Rs. 30,000 per month. Father & Mother are working in Haryana Govt. as class one officer. Avoid Gotra: Pannu, Gill, Dhul, (Kharb Not Direct). Cont.: 08930303002
- SM4 Jat Girl 24/5'4" M. Com, Pursuing B.Ed. Preferred Government Employee. Avoid Gotras: Kadyan, Dahiya, Cont.: 09878541622, 09416704653
- SM4 Jat Girl 23/5'3" Pursuing M.Sc. Physics (last year) Avoid Gotras: Rathee, Kharb, Rana, Cont.: 09812238950, 07027638950
- SM4 Jat Girl 25.7/5'4" M.Com. Employed as Clerk in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Avoid Gotras: Phaugat, Duhan, Bamel, Cont.: 09463121441, 08288888760
- SM4 Jat Girl 25/5'6" M.C.A., B.Ed. Employed in M.N.C, Delhi. Avoid Gotras: Chhikara, Dalal, Tomar, Shokeen, Cont.: 09302951802, 09313433046
- SM4 Jat Girl 26/5'3" MCA, MBA Employed as supervisor in Central Govt. on contract basis. Avoid Gotras: Bagri, Nehra, Nain, Cont.: 09417415367
- SM4 Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE) Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon, Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl, 26/5'2" M.Sc. (Microbiology) Working as Senior Lab Technician in AL Chemist Hospital Panchkula, Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya, Kadyan, Cont.: 08146082832
- SM4 Jat Boy, 27/5'10" BA/PGDCA (70%) from P.U Employed in Punjab Cooperative Bank as regular D.E.O. Father Haryana Govt. Officer. Own plat at Panchkula. Preferred match from Panchkula, Chandigarh. Avoid Gotras: Gill, Nandal, Bajar, Cont.: 09876875845
- SM4 For Jat Girl 28/5.5" MSC, Micro Biology and Pursuing B.ED, Avoid Gotra Joon, Rathi, Mor., Cont.: 09352532000

"हमें जिन पर गर्व है"

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला के आजीवन सदस्य श्री विजय चौधरी के सुपुत्र एवं आजीवन सदस्य श्री मांगे राम चौधरी के पौत्रा श्री केतन चौधरी ने सी.बी.एस.सी द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा में 96 प्रतिशत अंक प्राप्त करके अपने विद्यालय व अपने माता–पिता का नाम रोशन किया है व एन.आइ.टी. जालन्धर में कम्प्युटर साईंस में प्रवेश प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है।

इनकी शानदार सफलता पर जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

बढ़ाना शुरू कर दिया था और यहीं से उनकी राजनीतिक प्रतिभा और सूझबूझ का चारों और सिक्का चलने लगा था। यहीं से चौ0 छोटूराम का भविष्य निर्माण हुआ। उनका मुख्य लक्ष्य पंजाब के किसान को ऋणदाता के चंगुल से मुक्ति दिलाना था। इस मिशन प्राप्ति हेतू ही मानों उन्होने अवतार धारण किया हो। एक समय ऐसा भी आया जब उन्हें पंजाब प्रांत में सबसे समझदार और मंजा हुआ सियासतदान माना जाने लगा।

संयुक्त पंजाब में किसानों की आर्थिक मुक्ति हेतू छोटूराम ने जो भंयकर संघर्ष किया उसमें उनको पूर्ण विजय प्राप्त हुई। पंजाब के इतिहास में अन्य कोई ऐसा आंदोलन नहीं चला जिसमें हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि विभिन्न मतों को मानने वाले लोगों को इतनी बड़ी संख्या में संघर्षरत कर दिया। छोटूराम बेजुबान किसान की मजबूत व प्रभावशाली आवाज बने। देहात के गरीब व किसानों के कष्टों को दूर करने के लिए अनेक बिल पारित करवाए। सन् 1937 के पंजाब विधानसभा के चुनाव में 175 में से 102 सीटें जीतने पर इन्हे सर की उपाधि से सम्मानित किया गया व जिन्नाह की पार्टी को मात्र 2 सीटें मिली थी। ऐसी महान विभूति को किसी एक जाति समुदाय से जोड़ा नहीं जा सकता । वे तो जन कल्याण की बात कर गरीब मजलूम के परोपकार रहे। दीन बंधु अपने जीवन की अंतिम यात्रा तक कामगार, काश्तकार व किसानों के दुखों में गमगीन रहते हुए हमेशा इस कौम के दुखड़े को यह कहकर उजागर करते रहे - इस कौम का इलाही दुखड़ा किसे सुनाऊं, डर है कि इसके गम में घुट-घुट के मर ना जाऊं।

आज किसान की दुर्दशा और बर्बादी को रोकने के लिए सुखे, बाढ, बीमारी के बचाव हेतू केंद्र सरकार द्वारा किसान राष्ट्रीय सुरक्षा कोष स्थापित करने की आवश्यकता है। सर छोटू राम ने एक किसान कोष स्थापित किया था उसी का दायरा बढ़ाकर सर छोटू राम को सच्ची श्रद्धांजली दी जा सकती है। इस कोष से किसान-मजदूर और मजलूम को हर संभव मुश्किल झेलने में मदद देने के प्रावधान किए जाएं तथा किसान के हित में राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने हेतू किसान सुरक्षा संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। किसान की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये स्वामी नाथन की रिपोट शीघ्र लागू की जाये ताकि इसे अन्नदाता का भी उदार हो सके इसके साथ-साथ आज कृषक-मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इनके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतीशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसत्ता सम्पन्नता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीन बंधु सर छोटू राम की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण समाज, किसान कृषक-मजदूर वर्ग के विकास का उनका स्वपन साकार हो सके। इसी प्रकार किसान की भूमि अधिग्रहण की नीति पर पुनर्विचार किए जाने की आवश्यकता है ताकि कृषि भूमि पर आधारित समस्त ग्रामीण समाज की दयनीय हो रही आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सके।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ब्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

Recollecting and Realising the Greatness of the Mahatama -The Epoch Maker

- R.N. Malik

India is a very unfortunate country as it remained under the subjugation of foreign rulers for 1400 long years. Slavery for such a long period decimates the country existentially. Thank God! India survived but not without body blows and indelible scars on its civilization, culture, heritage, psyche, educational development and religiosity. Had India continued to be governed under its own rulers from the days of king Harshvardhan , sky would have been the limit for her advancement in all thespheres and would have occupied a very dominant position in the comity of world nations today.

The credit for ending this long dark age goes principally to Mahatma Gandhi who launched and led the Freedom Movement for 32 years against the mighty British empire and finally enabled us to be the master of our own destiny on 15/8/1947.You can imagine his contribution to the people of India and her succeeding generations for ending the continuous slavery of 14 long centuries and entering into the new dawn. In fact, his greatness was multi-dimensional. He combined and exhibitedrare human qualities in full .i.e. truth, non-violence, spirituality, simplicity, political asceticism, fight against untouchability and repression, civility,humility,glorification of the poor, control over lust and rage, total absence of malice and jealousy and the sublime thoughts. These are the attributes of human personality which Lord Krishna prescribes to Arujuna in the 16th chapter of Bhagwat Gita to reach God and attain Moksha. Probably Gandhi Ji imbibed these qualities from daily reading of Bhagwat Gita before going to sleep.One doubts, if any other historical figure possessed such a heavy bag of qualities along with milk of human kindness. Rabindranath Tagore gave him the title of Mahatma and Indian Government " The Father of the Nation".But he is rarely addressed, revered and remembered like that.

When he arrived in India on 9thJanuary, 1915 the political and social landscapes were almost barren. There was some greenery on the economic front in the form of networks of canal, railways and educational institutions. The boys started going to England for higher education (Gandhi, Patel, Jawahar, Subhash et.all.). Lord Curzon had mulled to rule over India for 1000 years and called India a jewel in the British crown. The art of 'Divide and Rule' was perfected when separate representation was granted to Muslims in Morleyreforms of 1909.Only Bal Ganga DharTilak was visibleon the political firmament whocould start some kind of movement to attainSwaraj (Home Rule or self-government within empire). But he was a limping lion after his incarceration for fiveyears in solitary confinement in Mandlay jail. Socially India was divided into Hindus, Muslims and Dalits with high boundary walls of mistrust.GandhiJidecided to fight against all the three (Raj, Hindu-Muslim divide and untouchability) simultaneously.

His arrival at this juncture looked as if Lord Krishna has fulfilled his promise of incarnation made in the 7th verse of Chapter 4 in Bhagwat Geeta whose arrival was long overdue.But better late than never (Porbandar the birth place of Gandhi Ji was also known as Sudamapuri).Gandhiji fought against the Raj peacefully throughout using Satyagrah as his Sudarshan Chakra. Earlier he had fought and triumphed a long battle against the white regime of General Smuts (1902-1914) in South Africa with the help of Satyagraha torestore civil (read human) rights to Indians. Who were being treated worse than slaves When Gandhi Ji left Africa for India Smuts paid him glowing tributes saying "I do not feel qualified to wear the shoes gifted by him. But I am glad that the saint is leaving the shores. I sincerely hope forever."General Smuts again told Churchill in London in 1942."He is a man of God. You and I are mundane people".

Gandhi Ji had already made up his mind to replicate the experiment of Satyagrah to attain Swaraj before coming to India.Soon after his arrival he roamed in India for two years to study the social and political milieu. The two victories in the Satyagrah at Champaran (Bihar) and Kheda district (Gujrat) made him India famous andmagnetized the budding leaders of India - Kriplani , Rajendra Prasad , Vallabhai Patel , Jawaharlal , Ali brothers, Rajgopalachari, Hakim Ajmal Khan, Ansari, Subhash, Jai Prakash, Mahadev Desai, Kalam Azad who moved like planets around the sun and this constellation formed the golden period of Indian history. These gentleman had made supreme sacrifices (Patel and Prasad left their practice, Subhash his ICS etc) and they were all little angels.Compared to them, the moden brand of politicians appear to be …..!

The opportunity to take on the Raj (Empire) from the front came in April 1919 when Gandhiji gave a clarion call to observe a nationwide Hartal on 6th April as a mark of protest against the passage of Rowlatt Act. The Hartal was a grand success and gave a jerk to the Raj. The real long drawn out war started from here. He made three assaults on the Raj (in 1920,1930 and 1942) with small battles in between e.g.boycott of the visit of Prince of Wales and Simon Commission. His fight against Hindu - Muslim divide and untouchability remained continuous.

The first assault started on 1.8.1920(thedayTilak died) when he launched the non -cooperation movement against the weak findings of Hunter Commission on JalianwalaBaghtragedy and the Treaty of Severs. The four phase program set for the movement was earth shaking and it peaked up in no time. For the first time Muslims and Hindus worked like brothers for the success of the movement. The foundations of the Raj were completely shaken. " The bridge between Hindus and Muslims is being erected", remarked Lord Reading, the new Viceroy.The British government for the first time realised that her days in India are numbered

The second assault was made in March 1930 when hestarted the famous Dandi March to break the Salt Law. By the time he reached Dandi, the crowd had grown into a sea of humanity. American press termed Gandhi Ji as "Christ has been reborn in India". Churchillrebuked the Viceroy Lord Irvin saying "It is very nauseating to observe that a seditious Middle Temple Lawyer now posing as Faqir was striding half naked up the steps of the viceregal palace to parley on equal terms with the representative of the King Emperor." But the net gains of this movement were two ; 1) US Government started taking interest in the Indian cause , 2) British Government realised that the day of departure was approaching.

The third phase of the War of Independence started on 9th August, 1942. Gandhi Jiasked the Britishers to quit India and launched the "Quit India Movement". As soon as the news of arrest of Gandhi ji, Kasturba and CWC membersspread the next morning, people came on the streets in anger and started burning the post office buildings,

uprooting railway lines and damaging the electric poles. India was now in great turmoil. Thousands of people were put in jail for a long time. Gandhi Ji was released after 26 months on medical grounds. Other leaders were released after 34 months. Indian masses were now restive. Sensing the general mood of the public, Lord Wavell, the Viceroy,even prepared a secret plan in 1944 to ship out British officials in case of any such conflagration.

Fortunately Labour Government came to powerafter the War and was knee deep in debt and there was grave financial crisis. She owed one billion pounds to India. It is not known whether it was paid back or not. There was shortage of food stuffs and long lines were visible before the food stores. Under the circumstances,Lord Attlee the PM rightly decided to grant independence to India and set 30th June, 1948 as the deadline for transfer of power. saying "This is the right time to pay gratitude to the people of India in exchange of contributions made by Indian soldiers during the war and secondly ruling India now required a special effort which British people were not prepared to make". Lord Mountbatten, the new energetic Viceroy did the job much earlier on 15.08.1947. Jawaharlal Nehru unfurled, the tricolour on the Red Fort. But the real General who achieved this feat was staying in a small house of a Muslim located in a narrow street in Calcutta to douse the communal fire.

565 states under the princes occupied half of the geographical area of the country. Their merger with India was meticulously achieved by Sardar Patel with thehelp of Lord Mountbatten. This was the second half of Indian Independence. Kashmir too was saved by him when Pakistan attacked the State.The division of the country could only be postponed and not avoided because the governance of this big coundry with communal tensions and 565 autonomous princely states inconformity with the complex proposals of Cripps Missionwas almost impossible.The Mission had proposed to create not a monolithic India but United States of India.

Role of Gandhi Ji in South Africa was thoroughly angelic and absolutely without any flaw or blemish at any stage. However, he made some mistakes in leading the national movement in India. He was never a man in hurry like Bose because he believed in the dictum ," Nothing is stronger than an idea when its time comes." And the idea came at the ripe time in 1942. His decisions were always by instincs and never premeditated and his followers always believed in his infallible ways.CWC never had a brain storming session to prepare the Master Plan fora road map for the freedom movement. Boycott of Simon Commission (Lord Attlee was one of its members and he was 100% pro-India) was unnecessary and unwise.It cost the life of LalaLajpat Rai and finally the deaths of Bhagat Singh and his associates.

People mostly criticize Gandhi Ji for sacrificing Sardar Patel for JawaharLal Nehru to become the Congress President in 1945. Gandhi Ji did this for two reasons. He felt genuinely that Nehru could handle international affairs better and minorities will feel little scared under Sardar Patel. But the manner in which the entire operation was carried out was shocking. Being a nationalist of very high order, Sardar Patel acquiesced to the will of Gandhi Ji, without any demur. However, he maintained complete hold over the organisation. The election victories of P.D.Tondon as Congress President and Dr. Rajender Prasad as President of India were due to him only.Other four mistakes of Gandhi Ji were:- Not preventing Ali brothers to part ways with the Congress in the 1928 Congress Session at Calcutta, compelling Sardar Patel (at the instance of Nehru and Mountbatten) to pay Rs.55 crore to Pakistan under the agreement for division of the assets, pampering Jinnah by holding seven meetings at his residence in 1944-45 and not rebuking his colleagues for criticizing seriously ill Subhash Bose at Tripuri Session in 1939 and compelling him to resign his presidentship in disgust. But

Gandhi Ji was essentially a human being and to err is human. These mistakes have to be weighed down against his monumental efforts to fight against the Britishers and attain freedom without firing a single shot. Such people are born once in centuries. Today we are enjoying the moonlight of freedom only because of him and his associates. However credit will have to be given to Britishers also for consolidating the fragmented India into a united India by 1858 and also creating an educational infrastructure which helped in educating the youth to become the leaders of the 20th century like Tilak, Gandhi ji, et.al.

His entire life has been assymptotic to the line of divinity. Innumerable messages from his life spread like sunshine. But the principle message is that one man can do wonders of wonders provided his intentions are wholly unselfish and altruistic. His famous Talisman, for human conduct was "Do unto others as you wish to be done by". May the soul of this Epoch Maker rest in peace for ever.

His efforts to fight against untouchability were also angelic. He admitted a low caste young man Dudabhai and his wife in his Ashram in June 1915 and made a salutary statement, " Hindus would not deserve freedom from the alien rule if they continued to treat a portion among them as untouchables; and caste Hindus are unlikely to obtain Swaraj if untouchables opposed it.Fight against untouchability is of transcendental value to me even surpassing the attainment of Swaraj". He detested the word "Untouchables" and gave them a new respectable epithet - Harijans(Men of God).The Poona Pact on 24th September against the Communal Award providing for separate electorates for Harijans was signed as a result of fast unto death by Gandhi Ji in the jail (1932) and this Pact demolished the wall of hatred and mistrust between the Harijans and the Hindus. Dr. Ambedkar was always at logger heads with Gandhi ji. Still Gandhi Ji allowed him to be the minister in the first Provincial Govt. in 1946.

His final grand moment as messenger and apostle of peace came in October 1946 when he reached Noakhali to douse the communal fire and save the lives of millions. There, he lived and walked with villagers and slept in their huts for four months till permanent peace was restored. Thereafter, he returned to Bihar in March 1947 and stayed there for few weeks to restore peace. He again reached Calcutta on 9th August"to pour a pot of water over raging communalfire".Eid day fell on 18thAugust. Half a million Hindus and Muslims attended his prayer meeting at the Foot-ball ground. He held a three day fast on 1st September to bring the communal violence under complete control. Lord Mountbatten paid him the richest tributes for his role in extinguishing the communal flare up in Bengal &Bihar. He said " In the Punjab we have 55000 soldiers and large scale rioting on our hands. In Bengal our force consists of one man (GandhiJi) and there is no rioting. May I be allowed to pay my tribute to the OneMan Boundary Force and his Second in Command, Mr Suhrawardy".

The history of world is replete with great ironies and anti-climaxes. One such anti climax came on 30th January, 1948 when Nathuram Godse, an Indian, assassinated this great epoch maker and that too at the prayer meeting at Birla House (A hunter also had killed Lord Krishna with an arrow .). His martyrdom was similar to those of Abrahim Lincon, Martin Luther King and Kennedy brothers. But his ultimate death occurred when we Indians (including Congress Party) completely forgot him and his ideals.In modern times only Nelson Mandela stands close to his stature. It is surprising that Nobel Peace Prize was not awarded to Gandhi Ji though his name was recommended thrice.

^bfM;k cuke Hkkjr* ;k ^xkao cuke 'kgj*

lqjtHkku nfg;k

समसामयिक भारतीय चर्चाओं और विवादों का एक बड़ा भाग गांव और उसकी समस्याओं पर केन्द्रित है। इस प्रक्रिया में हम गांव और षहर को दो विपरित ध्रुवों की तरह देखते हैं और उनकी रूढ़िबद्ध छवियों के आधार पर उनकी समस्याओं को प्रस्तुत करते हैं। इन छवियों में निहित विरूपणस और विकृतियां समस्याओं का अति सरलीकरण करती हैं और उनके आयामों की सच्ची समझ को धूमिल करती हैं। विवाद के मुद्दे हैं – नगरों द्वारा गांवों का षोशण, राश्ट्रीयनिवेष का नगरों पर विशय अनुपाती व्यय, कृशि की उपेक्षा और उद्योगों को बढ़ावा, नौकरियों में गांवों के लिये दरवाजे बंद, राजनीतिक प्रक्रियाओं में नगरों का वर्चस्व आदि। इन तथ्यों में सच्चाई तो है पर चतुराई से इन्हें ढ़कदिया जाता है तथा उजाकरणस करने के लिये सभी हथकंड़े अपनाये जाते है।

आजकल 'अंग्रेजी भाशा' बनाम 'मातृभाषा' बहस का मुद्दा बना हुआ है। राष्ट्रीय लोकसेवा आयोग की नौकरियों में अंग्रेजीग्रस्त मानसिकता ने रोटी की लड़ाई का प्रश्न खड़ाकर दिया है। अंग्रेजों के हिमायती तर्क दे रहे हैं – "अंग्रजी की खिड़की बंद कर दे, तो ज्ञान–विज्ञान और तकनीक में पिछड़ जायेगा। उसका आधुनिकीकरण नहीं हो पायेगा। वैष्वीकरण के दौर में इंडिया पिछड़ जायेगा, इसलिये सबके लिये समानरूप से पराई अंग्रेजी का ज्यों–का त्यों बना रहने दिया जाये।" सचमुच गजब का बोद्धिक चातुर्य है इन दलीलो, विचारो और भावनाओं के पीछे! अगर नहीं है तो हमारे सामाजिक–आर्थिक जीवन की वास्तविकताओं को देखने–समझने, उनसे रुबरु होने का सच्चापन। यदि सच्चापन होता तो यह बात आसानी से समझ ली जाती कि अवसर की समानता, नौकरियों के लिए बराबरी की दौड की कसौटी तभी लागू हो सकती है जब विशमता की कसौटी जन्मजात नही रही हो व जब समाज के कतिपय तबको को पीढ़ी–दर–पीढ़ी पैदाइशी ऊंच–नीच जन्मी योग्यता–अयोग्यता को तालाबंद कोठरियों में कैद कर के नहीं रखा गया हों। इस संभ्रात क्लास ने सदैव अंग्रेजी दमपर सत्ता को निरंतर भोगा है और इस एकाधिकार को बनाये रखनेक के लिये भी आमादा है। लोकसेवा आयोग की आई.ए.एस. की परीक्षा में अभी तक कुछमिलाकर 65 फीसदी यही शहरी इलाईट क्लास चुनी गई है महज 35 फीसदी ग्रामीण क्षत्र कें परीक्षार्थियों आये हैं कभी यह अनुपात देहातियों का 31 प्रतिशत तक नीचे चलागया है। ग्रामीण महिलाएं आईए.एस. में केवल 1 फीसदी ही आ पाई हैं शेष महिलाएं शहरी हैं।

काफी लोगों को यह बात हजम नहीं होगी या थेड़ी सी विचित्र लगेगी पर है यह सच्चाई कि यह विशिष्ट वर्ग भी एक तरह के आरक्षण की वजह से फल–फूल रहा है। यह आरक्षण है अव्वल दर्जे की सरकारी और गैर–सरकारी नौकरियों में जरूरी अंग्रेजी की महारत का यह तो सीधे–सीधे आंखों से दिखने वाली परन्तु अलिखित आरक्षण की बात हुई उसके अलावा अदश्य आरक्षण भी तो है। नाते–रिष्तेदारी, पारिवारिक संस्कारों, पब्लिक स्कूल की दोस्तियों के बल पर मिलनेवाला आरक्षण। निखालिस अमरिकी लहजे जाईये, आपको एक मंत्र बार–बार सुनने को मिलेगा पीपुल लाईफ अस अर्थात हमारे जैसे लोग। इन 'हमारे जैसे लोगी' पर कोई आंच नहीं आये, लोकषाही के आंडबर में अल्पतंत्र के विशेषधिकार बदस्तूर बने रहें, उन्हें कोई ठेस न लगजाये, इसलिये क्या कुछ नहीं लिखा जा रहा है अंग्रेजी के पक्ष में। अन्य आरक्षण के विरोध में खासकर जाट आरक्षण के विरूद्ध संभ्रात वर्ग ने आंदोलन की आग को हवा देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कारण, यह नितांत अल्पसंख्यक शासन वर्ग के लिए जीवन–मरण का प्रश्न है। नेहरू जी के शासन से आजतक 'डून स्कूल लॉबी', 'सेंटस्टीफन कालेज लॉबी' या 'हार्डवर्ड यूनीवर्सिटी लॉबी का प्रधानमंत्री कार्यालय में वर्चस्व निरंतर बना रहा है।

असल में हमारी समाजव्यवस्था ही आरक्षण पर टिकी है। हमारे संस्करणों में एक उच्चजातिका एकाधिकार जो प्रवाहित कर दिया वह आज एक विस्फोटक स्थिति ले चुका है। दिन प्रतिदिन की रीति–रिवाजों, विवाह शादियों तथा अन्य प्रक्रियाओं हेतू विशेष जाति के एकाधिकार से लेकर एक परिवार से पीढ़ी दर पीढ़ी देश के प्रधानमंत्री चुने जाने की प्रवृत्ति एक प्रकार का आरक्षण ही तो है। सत्ता के आसनों पर बैठने वाले लोग सब अपने बाल–बच्चों, पत्नि या रिश्तेदारों को राजनीति में लाते हैं सभी रजनीतिक दला में परिवार या विष्टि लोगों का कब्जा हैं–लोतंत्र में लोक अर्थहीन है। पर अब देहात या उपेक्षित पढ़ेलिखे युवक अंग्रेज के प्रभुत् का विरोध करने लगे हैं। जिन समूहों–समुदायों–वर्गो जब के पास वोट की ताकत होगी वे तो अपना अधिका मागेंगा ही – अग्रेजी की ढाल के साथ उनको योग्यता को कम नहीं किया जा सकता।

अंग्रेजी के वर्चस्व की आज के सन्दर्भ में एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हैं। देश के कुछ हिस्से और समाज अंग्रेजों के सम्पर्क में पहले आये तथा उन्होंने ज्यादा संघर्ष न करके अंग्रेजी हुकूमत को स्वीकारा। 1857 में अग्रेजो की सत्ता के विरूद्ध बगावत करने वाले इलाकों और लोगों पर विजेताओं ने सिर्फ खौफनाक जुलम किये, उनके उद्योग व्यवसाय, कृषि व्यवसथा परम्परा को नष्ट किया, बल्कि शिक्षा की दृष्टि से भी जान–बूझ कर उपेक्षित किया। किंतु आजकी इस सच्चाई से कोई कैसे मुकर सकता है

कि सरकारी कामकाज और उद्योग कारोबार में अंग्रेजी की अहमियत से पब्लिक स्कूलों, कॉन्वेंटों में पढ़ने वालों ा अपना विशिष्ट वर्ग बन जाता है। विशेषधिकार संपन्न विशिष्ट वर्ग। 'अंग्रेजी धोपने' निःसदेह एक राजनीतिक निर्णय है। डांवाडोल सामाजिक व्यवस्था से प्राप्त विशेषाधिकारों की बची–कुची खुरचन को अपने लिए सुरक्षित रखने की कोशिश है यह अधिकार प्राप्त वर्गों का जातिवाद।

जाटलैंड विशिष्ट वर्ग राजनेता, नौकरशाही व व्यापारी का शोषण क्षेत्र बन चुका है। इस क्षेत्र के त्वरित शहरीकरण ने कौम के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया। भारत में लगभग एक करोड़ लोग प्रतिवर्ष शहरों में पलायन कर रहे हैं और इस पलायन का सबसे अधिक दबाव दिल्ली के आसपास के जाट गांवों पर है। आजादी से पूर्व यूनियनिस्ट पार्टी का वर्चस्व तथा चौ. छोटूराम की किसान के प्रति समर्पणता से दिल्ली सं सटे जाट बाहुल क्षेत्र ने नेहरू जी को काफी भयभित कर दिया था। आजादी के बाद कांग्रेंस ने इस क्षेत्र के लिए अधोबित रणनीति क्रियान्वित कर दी एक तो दिल्ली के आस–पास जाट समुदाय के मजोरेटी डमोग्राफिक तेजी से शहरी करण की प्रक्रिया शुरू हुई तथा दूसरा राजनीतिक स्तर पर इस कौम का कद न बढ़ने दिया जाये। दोनों कदम कांग्रेस पार्टी के लिये लाभदायक सिद्ध हुये। दिलली राज्य में आज जाट हाशिये पर आ गये है। तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश व हरियाणा में भी जाट कौम को राजनीति वर्चस्व अब अघोगति की और है। जाट कौम मुख्यतः सुस्त व शान्तिप्रिय है। अकेले जाट को दिशा भ्रमित करना बिल्कुल मुश्किल नहीं, पर जाट संगठित तौर पर किसी सं भी लोहा लेने में निर्भीक एवं सक्षम हैं। यह कौम अपने अधिकारों के प्रति इतनी जल्दी सजग नहीं होती।''

आजादी के बाद किसान की आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक दिशा बिगड़ती देखकर चौ. चरणसिंह ने अफसोस जाहिर किया था कि भारत में उल्टी धार बह रही है अर्थात् यहां खेती पर आधारित आबादी बढ़ रही है पर कृषि की राष्ट्रीय आय में योगदान घट रहा है और उद्योग आधारित आबादी घट रही है पर राष्ट्रीय आय में उघेग जगत का भाग तेजी से बढ़ रहा है। चौ. चरणसिंह ने किसान समुदाय को 'अजगर' (अहीर, जाट, गुजर व राजपूत) के रूप में अपने अधिकारों के प्रतिसजग रहने के लिए शक्ति प्रदान की। समाजशास्त्री माईकल लिपृन को चौ. चरणसिंह के प्रयासों को प्रशंसा करते देखा और चौ. चरणसिंह के शहर बनाम गांव के सिद्धान्त को उन्होंनें स्वीकारा भी। चौधरी साहब ने चेताया था कि 'कृषि भारत की आत्मा है त्था इसका विकास भारतीय सभयता का विकास है। भारत में कृषि राष्ट्रीय जीवन और अर्थव्यवस्था का मूलभूत आधार रही है और दीर्घकाल तक रहेगी।'' यह पं. जवाहरलाल के फेबियन समाजवाद से मेल नहीं खाती थी, इसलिए उनके समर्थकों ने चौ. सहित की विचारध ारा का पूरे जोश से विरोध किया। चौ. साहिब की असली भारत की परिभाषा को अकूंरित होने से रोका। आजादी के समय देश की अर्थव्यवस्था में कृषि का 50 प्रतिशत से भी ज्यादा योगदान था जो आज सिर्फ 14 फीसदी रह गया है – निःसंदेह किसान का शोषण अब चरम सीमा पर पहुंच गया है।

चौ. देवीलाल ने भी इसके बाद किसान की अनदेखी करने का केन्द्र सरकार पर कटाक्ष किया और इसे 'लुटेरों' और 'कमेरों' के बीच का संघर्ष माना। जयदेव सेठी अर्थशास्त्री एवं योजना आयोग के सदस्य तथा अन्य आर्थिक विश्लेशकों ने ताऊ देवीलाल के तर्क का समर्थन तो किया पर केन्द्रिय अर्थिक नीति की धारा ग्रामीण क्षेत्र की और प्रवाहित करने में वे असहाय दिखें। चौ. महेन्द्र सिंह टिकैत जैसे सपाट किसान ने जाटू जुबरन में कह दिया –''इस देश में पूंजीपति सत्ता से रिश्ता जोड़कर किसानों का लहू चूसते रहें हैं। काश्तकारों से कौडियों के मोल उसकी काश्त (कच्चा कृषि उत्पाद) खरीद ली जाती है और फिर धुआं उगलती चिमनियों वाली इमारतों में पकाकर मोटा मुनाफा कमाया जाता है। अपने हाड–मांस गलाकर खेती करने वाला किसान तो हमेशा सूने आकाश की और ताका करता है। कईं गुना मुनाफा कामने वाला कौन है? यही लूटेरें हैं, इन्ही को शहरी कहा जाता है।''

'लूटेरों' और कमेरों के बीच द्वन्द्व जारी है। पर किसान असहाय है और सम्पन्न शहरी वर्ग सत्ता के सहयोग से काफी पिछड़ा कर दिया है। आखिर देश की राजनीतिक रणनीति क्या है जिसने पी?हले ग्रामीण संकअ को जनम दिया, उसे ओर गहराया और अब उसके निवारण के लिये सत्ता अपने आपको सक्षम कहती है। अभिजात के तीनों एक स्थायी संतुलन स्थापित करने के प्रयास के बजाय स्वयं आपस में लड़ रहें हैं। प्रत्येक अंग शेष दो अंगों से अधिक ताकतवर बनना चाहता है। इसका परिणाम है कि देश के आर्थिक स्त्रोतों की अभिजात वर्ग अधिकाधिक हड़डिया काटते गये। ग्रामीण विकास के लिए बहुत कम शेष बचा, इसलिये संकट है। निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है। कि ग्रामीण अर्थिक संकट वस्तुत भारतीय राजनीति का संकट है। ग्रामीण परिवेश के कुछ क्षेत्रीय राजनीतिक दल स्वंय को ताकतवर बनाकर अपना एकाधिकार बनाने में तो कामयाब हो गये हैं पर ग्रामीण ाहितों की रक्षा करने मे ंवे बिल्कुल असफल हैं। जाट कौम तो कुछ असमंजस की स्थिति में है। उसको क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने खूब गुमराह किया है तथा इस कौम का कोई थिंक टैंक तो है नहीं अतएवं भोले भाले जाट को रैलियों में बुलाकर भावुक बना कर दिशा भ्रमित कर दिया जाता है। 'गांव बनाम शहर' का संघर्ष जारी रहेगा और जाट या किसान पिसता रहेगा। यही हकीकत हमें स्वीकार करनी होगी। फिलहाल किसान के लिये कुछ नही हैं।

घर के कोने और माता के अंचल में बड़ा अन्तर है। एक शीतल जल का संसार और दूसरा मरुभूमि – प्रेमचंद

लोक संस्कृति विरासत की प्रतीक है पगड़ी

Mk- egkfl g ifu;k] d|:{k=

gfj;k.koh ixMh d vud çek.k fey gA bl l Kkr gkrk g fd gfj;k.kk d ykxk }kjk flj ij ck/kh tku okyh ixMh dk bfrgkl gtkjk o"k ijkuk gA çkphu dky e ixMh dk flj dh lj{kk d fy, /kkj.k fd;k tkrk jgk gA blfy, bl ifjèkku d lHkh ifj/kkuk e lokPp LFkku feyk gA gfj;k.kk lxgky; d|:{k= fo'ofo|ky; d çHkkjh Mk- egkfl g ifu;k bl y[k e ixMh dh nkLrku foLrr :i l crk jg gA

हरियाणा की लोक सांस्कृति विरासत पांच हजार साल से भी अधिक पुरानी है। इसके पुख्ता प्रमाण यहां पर हुई पुरातात्विक स्थलों की खुदाई से मिलते हैं। इन पुरातात्विक स्थलों से हरियाणवी पगड़ी के अनेक प्रमाण मिलें हैं। पगड़ी को हरियाणवी लोक जीवन में पग, पाग, पग्गड़, पगड़ी, पगमंडासा, साफा, पेचा, फेंटा, खण्डवा, खंडका आदि नामों से जाना जाता है। जबकि साहित्य में पगड़ी को रूमालियो, परणा, शीशकाय, जालक, मुरैठा, मुकुट, कनटोपा, मदील, मोलिया, और चिंदी आदि नामों से जाना जाता है।

पगड़ी की शुरूआत भगवान शिव की जटाओं से होती है। शिव अपने केशों को पगड़ी रूपी आकार में बांधते थे। आरम्भिक काल में शिव परम्परा की परम्परा से जुड़े हुए साधु–संत अपने केशों को पगड़ी में बांधनें लगे। पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर पगड़ी का परिधान तो सिंधु घाटी की सभ्यता से भी पहले था। उस समय नर और नारी दोनें ही पगड़ी पहनते थे। पगड़ी की महत्ता का वर्णन महार्षि मनु ने भी अपनी मनुस्मृति में किया है। वैदिक साहित्य की दृष्टि से यदि अवलोकन किया जाए तो पगड़ी विशेष वैदिक सम्मान का प्रतिक रही है। इस युग में इसे 'उष्शशि' के नाम से पुकारा जाता था।

महाभारत काल में भी पगड़ी की परम्परा ज्यों की त्यों बनी रही। शकों के समय में भी पगड़ी का चलन रहा, किन्तु इस युग में लोगों ने सुरक्षा की दृष्टि से पगड़ी का चलन रहा, किन्तु इस युग में लोगों ने सुरक्षा की दृष्टि से पगड़ी के स्थान पर चमड़े का टूकड़ा सिर पर रखना शुरू कर दिया। शकों और कुषाणों के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें कुषाण विजयी रहे, किन्तु वे शंकों के सिर पर पगड़ीनुमा चमड़े को देखकर स्तब्ध रह गये। अमादलपुर पुरातात्विक स्थल से खुदाई से मिली कुषाणकालीन मिट्टी की मूर्तियों पर बंधी हुई पगड़ियां इसका पुखता प्रमाण है। इस प्रकार पगड़ी बांधने की यह परम्परा निंरतर आगे बढ़ती रही और आगे चलकर हूण, द्रविड़, मंगोलियन युग तक चली आई। भक्तिकाल में पगड़ी को विशेष दर्जा मिला और इसका सम्बन्ध धर्मगुरूओं से जुड़ गया।

मुगलकाल में पगड़ी को विशेष सम्मान मिला और उसके ऊपर हीरे और मोतियों की रत्नों से जड़ी मालाएं तथा कलगियां लगाई जाने लगी। सिर पर पहले टोपी या कुल्लाह पहने जाने लगा और उसके ऊपर पगड़ी बांधी जाने लगी। पगड़ी के ऊपर खड़े हुए भाग को तुराई की संज्ञा भी दी जाने लगी। 17वीं शताब्दी में जब भारत में अंग्रेज आए तो उन्होंनें पगड़ी के स्थान पर हैट का प्रयोग शुरू किया, किंतु पारम्परिक पगड़ी ने हार नहीं मानी। राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, दीनबंधू सर छोटू राम, सेठ छाज्जू राम, सेठ धन्नामल सरीखे अनेक महापुरूषों ने पगड़ी की इस परम्परा को कायम रखा।

हरियाणा में जाति के अधार पर भी पगडियों के अलग–अलग रंग–रूप तथा आकार देखने को मिलते हैं। हिन्दू पगड़ी, मुस्लिम पगड़ी, सिख पगड़ी, आर्य समाजी पगड़ी, ब्रज पगड़ी, अहीरवाली पगड़ी, मेव व मेवाती पगड़ी, खद्दरी पगड़ी, विश्नोई पगड़ी, मारवाड़ी पगड़ी, रोड़ पगड़ी, बाणियां, सुनारी पगड़ी, राव पगड़ी, पाक्स्तिानी पगड़ी, मुल्तानी पगड़ी, पेचदार पगड़ी, तुर्रेदार पगड़ी व विवाह पगड़ी आदि का प्रचलन रहा है। लोकजीवन में भागलपुरी साफे का प्रचलन इसका प्रमाण है। हरियाणा में पिता की मृत्यु के पश्चात् बड़े बेटे को पाग या पगड़ी की रस्म भी अदा की जाती है। हरिणाणा के ब्रज भाग में रंग–बिरंगी पीली तथा नारंगी पगड़ियों का प्रचलन अधिक रहा है। अहीरवाल में गहरे लाल रंग, चुंदड़ी तथा छींटदार पगड़ियां अधिक पहनी जाती है। बांगड़ क्षेत्रा के लोग सफेद तथा गहरे रंग की पगड़ियां पहनते है। हरियाणा में रंग–बिरंगी पगड़ियों की विविधता ब्रज तथा अहीरवाल क्षेत्र में ही देखने को मिलती है।

हरियाणा लोकजीवन में परिवार के मुखिया द्वारा पगड़ी पहनने की परम्परा रही है। यहां पर ब्याह–शादी तथा अन्य अवसरों पर रूठों को मनाने के लिए पगड़ी उतारकर अंतिम प्रयास के रूप में मनाने की परम्परा अब भी कहीं–न–कहीं दिखाई पड़ती है। हरियाणा में अनेक स्थानों पर सुआ रंग की पगड़ी को लेकर गांव बापोड़ा जो जिला भिवानी में पड़ता है, के लोगों को मुस्लिम शासकों ने हरा दिया था, जिसकी बदौलत उन्होंनें धनाणा गांव पर चढ़ाई की थी उसी समय से आज तक हरियाणा में पगड़ी को लेकर यह कहावत प्रचलित है–

ckikMk er tkf.k;]] ; xke /kuk.kk]
djMh Vked cktrk] ; tk.k lkjk gj;k.kk]
lpb ck/k ixMh] tk jktifr ck.kkA

(यहां पर सूचई बांधा पगड़ी से अभिप्राय–हरे रंग की सुआ पगड़ी से है।)

वर्तमान समय में हरियाणा में विवाह के अवसर पर लाल, गुलाबी, छींट तथा राजपूती पगड़ियों को बांधने की शुरूआत हो चुकी है। इसके अतिरिक्त अनेक राजनीतिक पार्टियों ने भी पगड़ी की परम्परा को अपनाकर इसे राजनीतिक रंग दे दिया है। हरियाणा में भरतपपुरी, जोधपुरी, भागलपुरी, जयपुरी, मारवाड़ी आदि पगड़ियों को बांधने की परम्परा भी रही है।

हरियाणवी लोकजीवन में पगड़ी की परम्परा इतनी रच–बस गई कि दैनिक जीवन में प्रयोग किए जाने वाले मुहावरों, लोकोतियों, उक्तियों, रागनियों, लोकगीतों आदि लोक साहित्यिक विधाओं में पगड़ियों से जुडते हुए अनेक उदारहए देखने को मिलते हैं– पगड़ी उछालणा, पगड़ी तारणा, पगड़ी की लाज राखणा, खण्डवा पायां मैं धरणा, तुर्रा छोड़णा, पगड़ी बांधना, पगड़ी बदल यार होणा, पगड़ी धरणा, पगड़ीधारी होणा, अहमद की पगड़ी, मुहम्मद के सिर, घी भी खाओ पगड़ी भी रखो, उनकी इज्जत भी के खाक, जिन्नैं पगड़ी दे परदेसी, पगड़ी संभाल जट्टा, सिर सलामत तो पगड़ी पचास, कह तै मोड्डा बांधे पगड़ी न तै रह्वै उघाड़े सिर आदि अनेक से मुहावरे एवं उक्तियां हैं। ऐसी जनोक्तियां एवं कहावतें प्रचलित हैं, जिनका सीधा सम्बंध पगड़ी से है। उदाहरण के लिए – हुक्के तै हुरमत गई, नेम गया सब छूट, पगड़ी बेच तम्बाकू लिया, गई हिय की फूट। सब्जरंग के सिर अलबेली का बेला है, पां तै ओ पाणी पीवै, उसका नाम पहेला है। धरती का मण्डल देवा, सिर का मण्डल सूत, घर का मण्डल स्त्री, कुल का मण्डल पूत आदि वे उदाहरण है जो लोक साहित्या में पगड़ी की परम्परा को दर्शाते हैं।

आज पाश्चात्य के बढ़ते प्रभाव से हमारी पारम्पारिक विरासत की प्रतीक पगड़ी का वजूद खतरे में है क्योंकि नई पीढ़ी पगड़ी बांधने की परम्परा नकार चुकी है। आज विवाह–शादी के अवसर पर महज़ पगड़ी की रस्म अदायगी रह गई है। आज तक हरियाणा की पगड़ी की डॉक्यूमेंटेशन (शोधकार्य) भी नहीं की गई है। यदि अनादिकाल से चली आ रही इस पगड़ी की परम्परा को संभालकर नहीं रखा गया, तो आने वाले दिनों में हरियाणवी पगड़ी का इतिहास ढूढ़ने से भी नहीं मिलेगा।

कृष्ण के एकमात्र किशोर सखा– सुदामा!

ujUn vkgtk food

सुदामा जब श्री कृष्ण से मिलने द्वारका पहुंचे, तो भगवान कृष्ण ने उनका भव्य स्वागत किया। अपने अश्रुओं से सुदामा के चरण पखारे।

रुक्मणी ने विभिन्न फलों के रसों से पूरित पात्रों को सुदामा के सम्मुख प्रस्तुत किया। सुदामा ने देखा कि विभिन्न रंगों का रस पात्रों में था। 'यह सब तुम्हारे लिए है सुदामा!' कृष्ण ने उठते हुए कहा। सेवक तुरंत उनके निकट एक चौकी ले आए। कृष्ण उस पर विराजे और उन्होंने रुक्मणी के द्वारा पकड़े थाल में से एक पात्र उठाया और उसे सुदामा के मुख के पास ले जाकर बोले, 'अपने हाथ से पिलाऊं या स्वयं ही पी लोगे?'

सुदामा कृष्ण के प्रेम के सागर में डूब चुके थे। उनकी वाणी उनका साथ नहीं दे रही थी। बुद्धि को तो जैसे काठ मार गया था। उन्होंने अपनी डबडबाई आंखों से अस्पष्ट दिखते उस पात्र को थाम लिया और उसे पी गए।

'यह हुई न बात! अब यह दूसरा– गेरुए रंगवाला।'

सुदामा मना करते रहे, किंतु कृष्ण कहां मानने वाले थे! सुदामा फलों के रस को अपने शरीर में उतरता अनुभव कर रहे थे। वह किस–किस मार्ग से उनके उदर तक की यात्रा कर रहा है और उनका उदर तुरंत उसको ऊर्जा में परिवर्तित कर विद्युत के समान उनके अंगों को पोषित कर रहा है।

'सुदामा जी का सामान कहां रखवाना है?' सत्यभामा ने पूछा।

'यह भी कोई पूछने की बात है?' कृष्ण बोले, 'मेरे कक्ष में।'

' कृष्ण, मैं अतिथि–गश्ह में ठहर जाऊंगा।' सुदामा का स्वर हड़बड़ाया हुआ था।

'तो मार्ग में किसी अतिथि–गश्ह का आश्रय न लेकर अविराम चलते क्यों आए? तुम मेरे साथ मेरे कक्ष में ठहरोगे। मेरे कक्ष में तुम्हें कुछ असुविध ा है क्या?' कृष्ण के स्वर में सोया बाल– कृष्ण पूरी तरह उठा चुका था।

'मुझे लगता है कि मैं यहां संकोच में तुमसे उन्मुक्त होकर वार्तालाप नहीं कर पाऊंगा। मैं यह अनुभव कर रहा हूं कि मैंने असमय आकर सबके विश्राम को बाधित किया। तुम्हारा इतना विशाल परिवार है, उसके दायित्व हैं। मैं अतिथि–गश्ह में रहूंगा तो तुम अपने राजकाज के समय में से कुछ समय निकालकर मुझसे चर्चा करने आ जाना।'

'ओह, अब समझा तुम्हारा संकोच। तो चलो, सबसे पहले तुम्हारा संकोच मिटाया जाए।' कृष्ण ने एक सेवक की ओर देखा। वह आज्ञा पाने के उद्देश्य से श्री कृष्ण के निकट आया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। कृष्ण बोले– 'सुनो, महामंत्री से कह दो कि मैं अनिश्चित काल के लिए सुदामा के साथ हूं। एक प्रकार से मैं अवकाश पर हूं, पूर्ण अवकाश।' कृष्ण सुदामा की ओर मुड़े, 'मैं कब से विश्राम में जाने की सोच रहा था, परंतु कोई कारण हो तो जाऊं। ये सब मुझे घेरे रहते हैं। जो भी काम हो, मुझसे परामर्श लेते हैं। यह नहीं कि निर्णय लेने में आत्मनिर्भर हों। अब तुम्हारे आने से मेरे पास एक महान अवसर है– इन सभी को आत्मनिर्भर होने का प्रशिक्षण देने का और स्वयं भी विश्राम करने का।'

'मैं तीसरे दिन विदा हो जाऊंगा। तुम मेरे कारण अपने कार्य क्यों रोकते हो?' सुदामा को लगा कि वे कृष्ण के लिए कितनी बड़ी बाधा के रूप में उपस्थित हो गए हैं।

'अर्थात् तुम स्वयं को मेरे द्वारा सताए जाने की सभी बातों को प्रतिशोध जल्दी लौटकर लोगे। तुम नहीं चाहते कि राजकाज की मारा–मारी में फंसा तुम्हारा मित्र कुछ अधिक दिन विश्राम पा ले। जहां तक बात रही कार्यों की, तो कार्य कभी रुका नहीं करते। मैंने कर्मवीरों की सेना तैयार की है। यदि एक कर्मवीर किसी कारण से विश्राम में चला जाता है तो दूसरे पुरुषार्थी के पास वह कार्य स्वतः हस्तांतरित हो जाता है।' कृष्ण ने सेवक को विदा किया।

सुदामा कृष्ण के निश्छल मुख को निहारते रहे। कैसे सरल रूप से वह उनको छल रहा है! सुदामा को यह अपराध–बोध न हो कि उनहोंने असमय आकर अतिव्यस्त कृष्ण का समय नष्ट किया है, इसके लिए बात को इतने सुंदर रूप से कह रहा है कि सुदामा को लगे कि जैसे उन्होंने द्वारका आकर कृष्ण पर उपकार किया हो।व

'मैंने पता करवा लिया है, सुदामा जी मुक्तहस्त आए हैं।' सत्यभामा ने कृष्ण के निकट आकर कहा।

'एक बात बताओ, सुदामा! तुम इतने वर्षों बाद आए, मित्र के लिए कुछ लेकर तो आते। गुरुकुल में तो जब भी तुम वन में जाते थे, तब मेरे लिए कुछ–न–कुछ वन से लेकर आते थे। कभी बेर, कभी कंद–मूल, कभी रसभरी, कभी अमरक, कभी आँवला, कभी आम, कभी केला–और आज आए हो, हाथ हिलाते। कुछ तो कृष्ण किसी शोधकर्त्ता के समान सुदामा के कंधे पर लटकी पोटली की ओर देखने लगे– 'यह क्या है?'

सुदामा का ध्यान अपनी पोटली पर गया। वे पछताने लगे– 'टुकड़े–टुकड़े मोटा कच्चा चावल! क्या मैं इसे बाहर ही फेंककर नहीं आ सकता था? या मार्ग में पक्षियों को चुगा देता। अब कृष्ण इसे देखे बिना नहीं रहेगा। सबके सामने जब यह इस पोटली को खेलेगा तो पोटली के साथ मेरी दरिद्रता की गाँठ भी खुल जाएगी।' इससे पहले कि सुदामा कुछ कहते, श्री कृष्ण ने उनके कंधे से पोटली निकालकर खेल दी। सबसे निम्न श्रेणी के चावल सबके सामने थे।

'एक युग हो गया ऐसे चावल खाये।' कृष्ण ने एक मुट्ठी चावल उठाए, उन्हें सूँघा। उनके मुख का भाव बता रहा था कि जैसे उन्होंनें किसी सुगन्धित पुष्प को सूँघा हो। फिर उन्होंनें अपनी मुट्ठी का मुख खोला और थोड़े–से चावल अपनी बाईं हथेली पर डाले और उन्हें अपने मुख के सुपुर्द कर दिया। उन चावलों को चबाते हुए बोले, 'कठोर साधना करने वाले परिव्राजक इस प्रकार दैवी अन्न खाते हैं।''क्या आप जेठजी का और हमारा भाग भी स्वयं खा जाएँगे?' रूक्मणी बोली।

'ओह!' कृष्ण ने अपनी मुट्ठी पोटली पर खोल दी और बोले– 'दाऊ को ज्ञात हुआ कि मैंने अकेले ही सब चट कर डाला है तो वे उत्पात मचा देंगें। एक काम करो, अन्नकूट तैयार करो। उसमें ये चावल मिला देना। पूरा परिवार इस प्रसाद को पाए। अब हम मित्रों को एकांत में छोड़ दो। हम नियत समय पर अन्नक्षेत्र में मिलेंगें।'

'यह कृष्ण भी कुछ सोचता ही नहीं कि कोई उसके विषय में क्याा सोचता होगा या सोचेगा। उसे इन निकृष्ट कोटि के चावलों को खाने की क्या आवश्यकता थी? कितना सहज होता कि यदि वह उन चवलों को देखकर कहता कि इनको पक्षियों के लिए डाल दो। अब सुदामा के इन चावलों का इस महल में कोई उपयोग नहीं। परन्तु कृष्ण तो सौ हाथ आगे बढ़ाकर अपने परिवार के सभी सदस्यों को इन चावलों का 'रसपान' कराएगा।', सुदामा देख रहे थे कि कृष्ण प्रत्येक परिस्थिति में कितना सहज रह लेते हैं। परिस्थितियाँ उनसे उनका स्वरूप नहीं छीन पातीं। वे जैसे काल के ऊपर शासन करते हैं।

'तुम स्नान इत्यादि से निवृत्त होकर विश्राम करो, तब तक मैं दाऊ। सेवक आता ही होगा। वह जो कहे, उसे स्वीकार कर मुझे अनुगृहीत करना।' कृष्ण बोले।

कृष्ण ने देखा कि दाऊ बलराम भंडारा तैयार करवा रहें हैं।

'तुम आ गए, श्याम! हम तो समझ बैठे थे कि अब तुम बीस वर्ष पीछे।' बलराम हँसे, 'ऐसा कर, ये शाक–पात इस महापात्र में डालकर तू जा और सुदामा के साथ खेल–कूद।'

'दाऊ, मै। जानबूझकर उसे एकाकी में छोड़कर आया हूँ।' कृष्ण ने शाक का छाल उठाया उसे निहारा। नयन मूँदे। उनके अधर मुस्कुराए और उन्होंने अग्नि पर चढ़े महापात्र में वह थाल उल्ट दिया।

'क्यों?'

'दाऊ, तीन दिन अविराम पद–यात्रा कर सुदामा हमसे भेंट करने आया है। यदि मैं उसके साथ रहता तो वह मारे संकोच के न तो कुछ खा पाता और न ही सो पाता। इस समय का उपयोग, वह विश्राम करने और अपने संकोच को तोड़ने में लगा लेगा।' कृण ने अनेक बड़ी मूलियाँ उठाई और उनके बड़े–बड़े टूकड़े करके महापात्र में डाल दिए।

'मैनें सुना है कि उसकी बहुत ही दीन दशा है।' बलराम उस महापात्र में कड़छी घुमाते हुए बोले। उनका स्वर कोमल और सहानुभूतिपूर्ण था।

कृष्ण कुछ नहीं बोले। अनमने–से कड़छी घुमाते बलराम को देखते रहे।

'तुझे यह क्या हो जाता है रे? मैंने जो पूछा वह तूने सुन लिया या पुनः बोलूँ?' बलराम ऊँचे स्वर में बोले।

'दाऊ!' कृण शून्य में देखते रहे। उनका स्वर यह बता रहा था कि उन्होंनें बलराम की बात पहली ही बार में भली प्रकार से सुन ली थी। उनके स्वर में रहस्य था, 'दीन–हीन यहाँ कौन नहीं हैं?

'मै। तो यह जानतो हूँ कि तू निर्मोही दीन–हीन नहीं हैं।' बलराम ने ठहका लगाया।

'देखा जाये तो सूदामा केवल आर्थिक रूप से दीन–हीन है। परन्तु सामान्य दृष्टि केवल बाहरी आवरण ही देखती है। यदि एक धनी ज्ञान से दीन–हीन है, तो संसार को उसकी दीनता और हीनता कही दिखाई ही नहीं देती, अपितु सेसार उसकी इस हीनता को भी गौरवान्वित करता है। परन्तु सुदामा जैसे को देखकर कोई यह नहीं कहता कि देखो, पंक में पंकज खिला है। पंकज के निकट भी इसलिए नहीं जाना चाहते, क्योंकि कमल के सौर्न्य और सुगन्ध के आकर्षण से कहीं अधिक वे कीचड़ में सन जाने से त्रस्त हैं। सुदामा आत्मा को धनी है, सरलता का प्रतिनिधि है और ज्ञान का भंडार है।'

'तो यह भंडार इतने समय तक कहाँ था? पहले तुम्हारे पास क्यों नहीं आया? जो इस भंडार के शुभागमन पर तुमने भंडारे का आयोजन किया है।' बलराम बोले, 'व्यर्थ इतने दिन कष्ट सहता रहा। पहले आता।'

'समय से पहले कोई कैसे आ सकता है, दाऊ,' कृष्ण ने बलराम के हाथों से कड़छी ले ली और स्वयं घुमाने लगे।

बलराम हँसे और कृष्ण की ओर मुड़े, 'मुझे सूचना मिली कि मेरे निर्मोही श्याम के मन मे सुदामा की दीन–दशा देखकर इतना मोह उमड़ा कि उसके अश्रु बरस पड़े।'

'उसे मोह नहीं कहते, दाऊ! आपके सामने जो शब्द आता है, आप उसी का प्रयोग कर बैठते हैं। कृष्ण के अधरों पर द्वितीया के चन्द्रमा के समान मुस्कान की रेखा खिंची।

'तो क्या कहते हैं?'

'उसे करूणा कहते हैं।' कृष्ण बोले।

'करूणा और मोह में अंतर ही क्या है,' बलराम ने अपने कन्धे उचकाए।

'अंतर तो आकाश ओर पाताल का है; परन्तु मै। आपको बताने नहीं जा रहा।' कृष्ण भंडारे की रसोई से नीचे उतर आए।

'पर तुम मुझे करूणा और मोह का अंतर क्यों नहीं बता रहे,' बलराम के स्वर में जिज्ञासा कम थी, आदेश व हठ की ध्वनि अधिक।

'इसलिए, क्योकि आप पहले ही यह मानकर चल रहे है। कि आप दोनों को ही मानते हैं। जब आपने किसी भी तत्त्व की निष्पत्ति पहले ही निकाल रखी है तो फिर मै। कुछ भी कह लूँ, आप उससे असहमत ही होगें। फिर क्या लाभ अनावश्यक रूप से ऊर्जा व्यय करने का?' कृष्ण ने अपनी स्पष्टवादिता प्रकट की।

'मैने ऐसा कब कहा?'

'आप अपने प्रश्न की भाषा देखिए। आपने कहा कि करूणा और मोह में अंतर ही क्या है? अर्थात आप पहले से ही यह धारणा कर चुके हैं कि दोनों एक तत्त्व हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो आपके प्रश्न की भाषा दूसरी होती। आप कहते कि मैं तो करूणा और मोह को आज तक एक ही समझता था। यदि इनमें कोई भेद है तो तुम मुझे बताओ `कृष्ण मुस्कुराए, 'यह भाषा जिज्ञासु की होती है। जिज्ञासु के लिए ज्ञान के द्वार स्वयं खुलते चले जाते हैं।'

'अब तुम्हारी तरह हमारी पकड़ शब्दों पर तो नहीं है। हम तो बस कार्य सिद्ध हो जाए, ऐसी भाषा बोलते हैं।' बलराम ने कृष्ण की बात को गंभीरता से नहीं लिया और कुछ खीजकर बोले तुम शब्दों पर इतना क्यों ठहर जाते हो,'

'मै। निःशब्द पर भी तो ठहर जाता हूँ, आपने उसे क्यों नहीं रेखांकित किया? इसलिए कहता हूँ कि सत्य को खंडों में देखने से जो निर्मित होता है, वह अर्धसत्य होता है।'

'अच्छा, अब बतओ भी के तुम सुदामा की दीन–दशा देखकर क्यों रोए थे? मेरे पास ये ही शब्द हैं, इसलिए इन शब्दों को लेकर वितंडावाद खड़ा मत करना। तुम अच्छी तरह समझते हो की सामने वाला क्या कहना चह रहा।' बलराम ने जैसे कृष्ण को डाँटा, 'मुझे उलझाया मत करो। अन्यथा उसमें उलझकर मुझे बहुत कुछ विस्मृत हो जाता है।'

'पहले आप मेरे अश्रुओं के विषय में जानना चाहेंगें या अर्धसित्य के विषय में या शब्द–चयन और उसके प्रभाव के विषय पर व्याख्यान चाहेंगें? जो आप कहें।' कृष्ण मुस्कुराए।

'तुम फिर वही सब घालमेल करने लगे। मै। सभी विषयों पर तुम्हारें विचार जानना चाहूँगा और इन तीनों विषयों का स्मरण भी तुमको ही रखना है। मै। तो केवल तीन की संख्या स्मरण रखूँगा। पहली बात तुम अपने अश्रुओं की ही बताओ कि बड़े–से–बड़ा दुःख भी तुम्हारे नेत्रों से अश्रु का एक कण नहीं गिरवा पाया और वहाँ झरने बह रहे थे।' बलराम ने जैसे कृष्ण की दुर्बलता को पकड़ने की विजयी मुस्कान के साथ कहा।

'लगभग बीस वर्षों पश्चात् सुदामा मुझसे मिलने आया है, केवल मिलने! वह आया भी किस स्थिति और भावदशा में है! उसके पास अपना कुछ भी नहीं है। वह निर्धनता की पराकाष्ठा पर है। और इस स्थिति में भी सहज होकर मुझ तक आया है। उसने जैसा है, जहाँ है–वैसा स्वयं को मेरे समक्ष लाकर खड़ा कर दिया। उसने अपने में कुछ भी कृत्रिम नहीं जोड़ा, कुछ भी आरोपित नहीं किया। अपने को छिपाने के लिए कुछ भी नहीं ओढ़ा। एक प्रकार से वह निर्वसत्र मेरे सम्मुख उपस्थित हुआ है।

वह देहातीत होकर यात्रा करता रहा। न उसे भूख घेर पाई और न प्यास ही सता पाई। वह एकनिष्ठ हो मेरी ओर बढ़ता ही रहा–अविराम। मार्ग ने उसके लिए अनेक प्रलोभन बिछाए होगें। पर वह किसी अभीप्सा में चलता रहा। उसने उस यात्रा में अपने नियम–तप'व्रत भी त्याग दिए। वह दीन–हीन होकर मेरी शरण में आया है। इसी को भक्त कहते हैं, दाऊ। यही प्रेम है, यही श्रद्धा है।

वह अज्ञात की यात्रा पर निकला। उसके लिए मेरा मिलना या न मिलना, मेरा उसे पहचानना या बिसरा देना, हृदय से लगा लेना या तिरस्कृत कर लौटा देना–यह सब अज्ञात था। वह प्रत्येक स्थिति को स्वीकार कर चला था। परन्तु मुझे प्रत्येक अज्ञात यात्रा ज्ञात होती है। ऐसा अपूर्व प्रेम पाकर तो मेरे आनंदाश्रु रूक नहीं सकते। आपको स्मरण ही होगा कि जब गुरूदेव संदीपनी के आरम में मैं पहली बार सुदामा से मिला था, तभी मैंने उससे कह दिया था कि तुम्हें मैंने अपने कहा। तुम मेरे हुए। मैं तुम्हारा!'

मौन कभी–कभी बाणी से अधिक वाचाल होता है। – महात्मा गांधी

सुखी व आनंदमय जीवन के सूत्र

राज सिंह दहिया

1. याद रखिए यदि आपका पैर फिसलता है तो आप संभल सकते हैं परंतु जुबान फिसल जाए तो यह गहरा घात कर देती है।
2. समय से पहले और समय पर कार्य करने वालों को समय का भी और किसी भी चीज का और कभी अभाव नहीं रहता।
3. जब समय होता है सोचते नहीं, जब सोचते हैं समय निकल चुका होता है।
4. उन्नति उसी की होती है जो प्रयत्नशील है।
5. जो बीत गई, उसे याद न कर। आने वालों का ख्याल न कर। वर्तमान को बरबाद न कर।
6. क्रोध एक अग्नि है जो दूसरे से पहले हमें स्वयं को जला देती है।
7. अपने भाइयों से नहीं अपनी बुराइयों से नफरत कीजिए।
8. प्रातः काल जो नियम से, जाए घूमने रोज।
   बल–बुद्धि दोनों बढ़े, मिटे कब्ज का रोग।।
9. जो व्यक्ति दूसरों की बातें आप से कहता है तो आप निश्चय जानो वह आपकी बात भी दूसरों से कहता होगा, किसी को अपनी दिल की बात न बताओ।
10. विचार करके काम करना बुद्धिमानी है।
    काम करके विचार करना नादानी है।।
11. आलस्य को, आराम को, गुस्से को छोड़ दें।
12. कोयल काको देत है, कागा काको लेत। तुलसी मीठे वचन से, जग अपना कर लेत।।
13. मारना चाहते हो, तो बुरी इच्छाओं को मारो।
14. खाना चाहते हो, तो गुस्से को खाओ।
15. लेना चाहते हो, तो माता–पिता और गुरु का आशीर्वाद लो।
16. देखना चाहते हो, तो अपनी बुराई को देखो।
17. भागना चाहते हो, तो पराई निंदा व पराई स्त्रियों से भागो।
18. तोलना चाहते हो, तो बात को तोलो फिर बोलो।
19. बड़ों के अनुभव से लाभ उठाना ही उनका सम्मान करना है।
20. तीखे और कड़वे शब्द, कमजोर पक्ष की निशानी है।

1. आनंद का पहला नियम स्वास्थ्य है और स्वास्थ्य का पहला नियम व्यायाम है।
2. जो काम अपने को बुरा लगे वह किसी के साथ न करो।
3. यदि सुखी रहना चाहते हो सादा जीवन व्यतीत करो।
4. यदि आप को जीवन से प्यार है तो समय को बरबाद न करो।
5. खुद चमको और दुसरों को चमकाओ।
6. दुनिया में सुख आवश्यकताओं को बढ़ाने में नहीं बल्कि कम करने में है।
7. परेशानियां होते हुए भी कभी परेशान न हों।
8. परमात्मा पूजा का भूखा नहीं, प्रेम का भूखा है।
9. अमीर बनना चाहते हो तो खर्च आमदनी से कम करो।
10. सुंदर वही है जिसके काम सुंदर हैं।
11. बदले की भावना कभी भी न रखें।
12. अच्छा बनो व अच्छा बनाओ।
13. ईश्वर की शरण में जाकर उस पर पूर्ण विश्वास करो।
14. किसी भी स्त्री को अपशब्द न बोलो हमेशा आदर करो।
15. निःष्काम सेवा करके महामृन्तूज्य–मंत्र करना चाहिए।
16. सोच व आहार अच्छा रखो, Life Style अच्छा बनाओ, Do Good Be Good
17. माता–पिता व गुरु का सम्मान व प्रभू का ध्यान रखें।

जिंदगी में खुशी मिलती है अच्छी सोच व अच्छी Feeling हो।

Physical Health is Important.

i. As like as Jogging, Purely Vegetarian
ii. Water Therapy is must morning 2-3 glass of water.
iii. No Tension, No Depression and Emotionally Strong
iv. Wealth is lost, little is lost, Health is Lost Some thing is lost. Best Character is lost every thing is lost.

बड़ों का ध्यान, माता–पिता का सम्मान व भगवान का ध्यान हमेशा रखो। विनम्रता, सेवा भाव संतुष्टी, Patience होनी चाहिए, कम बोलना अपनी जुबान से मीठा बोलना, किसी भी बात को मन में नहीं रखना। तीर से कमान व मुंह से जबान निकलने पर वापिस नहीं आती। चोट का घाव भर जाता है परंतु वाणी का घाव नहीं भरता है।

3 S का फार्मूला : SALT, SUGAR, STRESS आज से ही कम कर दो।

स्वामी चिदानंद जी महाराज (My Guru Says :- SERVE, LOVE, GIVE, PURIFY, MEDITATE AND REALISE)

BE GOOD------------ DO GOOD

1. इच्छाओं व कामनाओं को जितना बढ़ाओगे उतना ही दुःखों का कारण है जितना कम करोगे उतना ही आनंद है। कर्म को प्रधान बनाओ अपने आप सब कुछ मिलता चला जाएगा और कामना कभी खत्म नहीं होती हम ही खत्म हो जाते हैं।
2. शरीर को बीमारी तो ठीक हो सकती है लेकिन मन की बीमारी कभी ठीक नहीं हो सकती है। मन की बीमारी अच्छे सत्संग से, गुरु वचनों से व योगा से ठीक हो सकती है। जीवन में खुश रहने के लिए अच्छी सेहत चाहिए। वर्तमान में जीना सीखो। दुःख को दूसरों को सुनाकर सुख मिलता है।
3. इंसान के पास अच्छी संपत्ति, सम्मान व संतान भी है परुं सुख नहीं है तो सब कुछ अधूरा है। आपको जो भी धन, माया मिलनी है वह जरूर मिलेगी।
4. वासना का उपाय है उपासना, इंद्रीयों को वश में करता है मन और मन को वश में करती है बुद्धि, व बुद्धि को ठीक करती है आत्मा, और आत्मा को वश में करता है परमात्मा।
5. किसी की इज्जत करोगे तो इज्जत मिलेगी।
6. किसी से ईर्ष्या द्वेष व दूसरों की निंदा मत करो। आपस में प्रेम–प्यार व मधूर संबंध रखो। सोच व आहार अच्छा रखो। Life Style को अच्छा बनाएं। गृहस्थ जीवन की गाड़ी दो पहियों से चलती है। आपस में तालमेल व Adjustment ठीक रखनी चाहिए। आपस में विश्वास बनाकर रखना चाहिए।

मुसिबत बताती है कि हम किस मिट्‌टी के बने है। – अज्ञात

बाल विवाह अभिशाप है

HkjpUn tu] ckMej

बाल विवाह हमारे देश की सदियों पुरानी कुरीति बनी रही है। इस कुरीति के पीछे अन्धविश्वास परम्पराऐं, रूढ़ियाँ सहारा बनी हुई है। जिसके कारण अक्सर बाल विवाहों का आयोजन न चाहने के बाद भी सामाजिक कुप्रथा के कारण करने की मजबूरी ने मुंह फैलाये रखा है। बाल विवाह का प्रचलन देश के करीब करीब सभी भागों में कम अधिक की संख्यां में होता हे। जहां शिक्षा का सर्वाधिक प्रभाव के साथ प्रचार प्रसार रहा है वे क्षेत्र बाल विवाह के गुणों की अपेक्षा अधिक दोषपूर्ण समझने के कारण बाल विवाह से बचते जरूर रहे हैं लेकिन फिर भी ऐसा क्षेत्र भी बाल विवाह की चपेट में आते रहे। देश में हरियाणा, मध यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, राजस्थान आदि कुछ प्रदेश तो बाल विवाह के घर बने हए है। जहां बाल विवाह धड़ल्ले से बिना किसी सामाजिक बन्धन एवं कानूनी खौफ न होने के बाद भी होते रहते है। बाल विवाह की बात करें तो बच्चा–बच्ची (लड़का–लड़की) मां के गर्भ में होते है तो उसके मां बाप वैवाहिक सबंध जोड़ देते है। उसके बाद बच्चे का जन्म होने के बाद गोद में उठाकर उसका विवाह रचाया जाता है। बाल विवाह 1 वर्ष से लेकर 12–14 वर्ष की कच्ची आयु में इन्हें विवाह के बंधन में बांध दिया जाता है। भारत में कानून के तौर पर लड़के के विवाह की आयु 21 वर्ष एवं लड़की की आयु 18 वर्ष रखी गई है लेकिन इसके उपरान्त भी इन निर्धारित आयु से कम आयु के बच्चों का बाल विवाहों का दौर थम्मते थम्म नहीं रहा है।

भारत में बाल विवाह करने के कई कारण रहे है। हमारी सामाजिक व्यवस्था में लड़की को बोझ समझा जाता है और उस बोझ से जल्दी से जल्दी मुक्त होने के लिए बचपन में उसकी शादी कर दी जाती है। बचपन में शादी करने पर दहेज कम देना पड़ता है। बच्ची के बड़ी होने पर किसी कारण विरोध करने की स्थिति आवे तो बचपन में उसे विवाह के बंधन में बांधने से भविष्य की आनाकानी संकट से मुक्त हो सके। किसान वर्ग में तो खेती बाड़ी के कार्य से निपटने के बाद अक्सर समय सुविधा को ध्यान में रखकर नन्हे बालक बालिकाओं की शादी रचा देते है। शहरी क्षेत्रों में बच्चों के बड़े होने पर दहेज की मार से बचने के लिए बाल विवाह का जानबूझ कर सहारा लिया जाता है। इसी प्रकार लड़की के लिए लड़का ढूढ़ने की बड़ी उम्र में आने वाली कठिनाईयों से बचने के लिए बाल विवाह करना उपयुक्त समझते हैं। बड़ी उम्र में शादी के लिए लड़के लड़की को देखने के बाद ठुकराने की स्थिति से बचने के लिए बाल विवाह को आसान समझा जाता है। विवाह की समझ पर लड़के–लड़की द्वारा पसन्द नापसन्द की प्रक्रिया से सामाजिक प्रतिष्ठा पर दाग नहीं लगे बाल विवाह को हथियार बना दिया है।

सामाजिक रीति रिवाजों, प्रचलन, कुरीतियों, रूढ़ियों, परम्पराओ अन्धविश्वासों ने बाल विवाह को बढ़ावा दिया है वहां पर बालिका को बड़ी होने पर यौन शौषण से बचाने के लिए बाल विवाह कर बचाने की मां बाप की सोच रही है। इसके उपरान्त एकल शासकीय परिस्थितियों में शासक वर्ग की बदनियत से बचने हेतु, छोटी छोटी बालिकाओं का विवाह रचाने की मां बाप की मजबूरी ने बाल विवाह करने को बाध्य किया है। परिवार में वृद्धअवस्था के दादा दादी की बड़ी हार्दिक इच्छा रहती है कि वे मरने से पहले अपने पोते पोती के हाथ पीले देखना चाहते है। घर में बहू लाने की उनकी तीव्र इच्छा भी बाल विवाह का कारण रही है।

बाल विवाह होने पर बालक बालिकाऐं शारीरिक एवं मानसिक रूप से उत्पीड़ित रहते है वहां कहीं आर्थिक समस्याऐं उन्हें जीवन भर झकझोरती रहती है। दासता उन्हें बचपन से घेर लेती है। इसके अतिरिक्त बाल विवाह के कई दुष्परिणामों से दाम्पत्य जीवन के साथ पारिवारिक समस्याऐं इन्हें सताती रहती है। नन्हे मुन्ने बालक बालिकाओं के खेलने, कूदने, उछलने, मचलने, इठलाने की स्वतंत्रता की उम्र में इनका विवाह करने का अभिप्राय इनके साथ भंयकर खिलवाड़ है। जिसके दुष्परिणाम बाल विवाह के दाम्पत्य जीवन के बंधन में बंधने वाले बालक बालिकाओं की शादी होने पर उन्हें छोटी आयु में मां बाप बनना शारीरिक रूप से दुर्बल, कमजोर कर देता है। ऐसी स्थिति में जवानी आते आते ये बुढ़े नजर आते है। बचपन में होने वाली औलाद भी कमजोर होने के साथ कई प्रकार की बिमारियों से ग्रस्त रहती हैं लेकिन ये परिवार नियोजन की महत्ता को अवश्य ठेगा दिखाती है और आबादी बढ़ाने में अपनी सुधबुध खो देती है।

बचपन में विवाह होने के बाद जब जवानी आती है तो उस समय दाम्पत्य जीवन का अनमेल जीवन की गृहस्थी चलाने में बाधक बन जाता है। जवानी में लडकी पढ़ी लिखी बन जाती है तो उसका पति अनपढ़ एवं व्यसनों से ग्रस्त होता है तो दोनों का जीवन निश्चित रूप से नारकीय बन जाता है। कहीं कहीं लड़का पढ़ लिख कर उच्च स्थान पर

पंहुचता है। उसकी बाल विवाह की पत्नी अंगूठा छाप अर्थात अनपढ़ होती है तो उसका जीवन समस्याओं का पिटारा बन जाता है। इतना ही नहीं बाल विवाह वाली दम्पति में यदि लड़के की मृत्यु हो जाती है और उसकी पत्नी विधवा बन जाती है तो उसे अपने जीवन में कितना तिरस्कार झेलना पड़ता है यदि उसकी गहराई में जायें तो रोगंटे खड़े हो जाते है। जिस जाति में विधवा विवाह नहीं होता है तब वह बालिका जब जवानी की पगढंडी पर चढ़ती है तो उस पर यौन शोषण के काले बादल मंडराने लगते है। बलात्कार का शिकार होती है। उसे मजबूरन बाजारू बनाया जाता है। जिस समाज में विधवा विवाह होते भी है तो उसे समाज में भी बाल विवाह को अपमानित होकर दासता का जीवन जीने के साथ कामवासना का साधन बनना पड़ता है। कभी कभी लड़की अपने पति का मुंह देखे बिना विधवा हो जाती है तो उसका हाल बेहाल हो जाता है।

बाल विवाह होने के बाद जब वह बहू बनकर जिस घर में है तो उसका लिखना पढ़ना तो दूर रहा मनमर्जी से कुछ करने का हक भी खो देती है। सास भी बहू से नौकरानी की तरह कार्य करवाती है और दासता का जीवन जीने को बाध्य करती है। यदि भूल से भी सास के विरूद्ध आवाज उठाने, शिकायत करने, आज्ञा का उल्लंघन करने की हिम्मत की तो शारीरिक मार को भी झेलना पड़ता है। अक्सर बाल्यकाल में बच्चों के विवाद के बाद लड़के का यौन के प्रति झुकाव नहीं होने पर लड़की को ऐसी स्थिति में राह भटकते भी देर नहीं लगती। ऐसी स्थिति में बदनामी से बचने के लिए आत्महत्या का सहारा लिया जाता है या फिर पति एवं उसके परिवार के हाथों मारी जाती है।

बाल विवाह के दुष्परिणामों को देखकर उसे रोकने के लिए भारत सरकार ने कई प्रकार के समय समय पर कानून बनाये। सन् 1860 में इण्डियन पीनल कोड, 1872 में स्पेशल मैरिज बिल, 1891 में एज ऑफ कन्सेंट बिल, 1927 में हिन्दुचाइल्ड मैरिज एक्ट, 1929 में चाइल्ड मैरिज रीस्ट्रेंट एक्ट संशोधन एवं 2006 में दि प्रदि्दबिशन ऑफ चाइल्ड मैरिज एक्ट बना लेकिन इनके बाद भी बाल विवाह रूक नहीं रहे है। इसके पीछे सरकार की शक्ति का अभाव, जन प्रतिनिधियों का नाजायज हस्तक्षेप, प्रचार प्रसार की कमी, जन जागरण का अभाव, समाज सेवियों की शिथिलता, शिक्षा की कमी सामाजिक कुरीतियों को मिटाकर सुधार करने की जागरूकता नहीं होने से बाल विवाह आज भी समाज का अभिशाप बनी हुई है। यदि बच्चों को सुखी एवं समृद्धशाली जीवन बिताने के लिए योग्य और सक्षम बनाना है तो बाल विवाह को कड़ाई से बंद करने एवं करवाने की पहल सभी स्तरों से करनी होगी।

जाट गौरव सिद्धाचार्य जसनाथ जी

jkd's'k ljkgk

चौदहवीं व पन्द्रहवीं शताब्दी में जिस समय राजस्थान में धन्ना, पीपा आदि संतों के द्वारा रामानन्द, कबीर व रैदास से प्रभावित होकर ध ार्मिक क्षेत्र में एक नई निर्गुण विचारधारा को जन्म दिया जा रहा था उसी समय वहां मुसलमानों के प्रभाव का दौरा भी अपनी चरम सीमा पर था ऐसे में राजस्थान में कुछ ऐसे राजस्थानी संत हुए जो हिन्दू व मुसलमान विचारधारा के बीच सामांजस्य स्थापित करने के लिए प्रयासरत थ। ऐसे संतों में गुरू जाम्भेजी व सिद्ध जसनाथ जी प्रमुख थे जिन्होंनें हिन्दू व इस्लाम में प्रचलित आउम्बरों व रूढ़ियों का खण्डन कर जनता को धर्म के वास्तविक रूप को समझाने का प्रयास किया सिद्ध जसनाथ जी राजस्थान के महान सामाजिक–ध ार्मिक सुधारक थे वे न केवल सुधारक थे बल्कि समन्वयकारी संत भी थे इन्होंने समाज के नैतिक स्तर को ऊपर उठाने का सफल प्रयत्न किया तथा हवन, योग्याभास ओर नाम–स्मरण को आपसी साधना पद्धति में स्थान देकर वैष्णव धर्म, नाथ पंथ और उस समय में प्रचलित अन्य सम्प्रायों के सिद्धांतों का समन्वय किया। सिद्ध जसनाथ जी ने समाज के नैतिक स्तर को ऊपर उठाने के लिए अंहिसा, सदाचार, उपासना तथा शुद्धि आदि के बारे में कुछ आवश्यक निर्देश भी दिये और अनुयायियों के लिए कुछ नियमों का पालन करना भी अनिवार्य ठहराया था। इस प्रकार सिद्ध जसनाथ जी ने आदर्श समाज के निर्माण हेतु प्रयत्न तो किया ही साथ ही जन साधारण के लिए मुक्ति का सरल और व्यवहारिक मार्ग भी प्रस्तुत किया। सिद्ध जसनाथ जी का सम्प्रदाय आज भी जीवित है और उनके अनुयायी आज भी उनके द्वारा प्रतिपादित नियमों का पालन करते हुए देखे जा सकते हैं।

सिद्ध जसनाथ जी काा जन्म विः सवंत 1539 कार्तिक शुक्ला एकादशी शनिवार के दिन कतरियासर नामक गांव (बीकानेर के पास) में हुआ था यह हमीर जी नामक जाणी जाट और उसकी पत्नी रूपादे के पोष्य पुत्र थे ये हमीर जी को जंगल में डाबले तालाब पर पड़े मिले थे माता–पिता ने दनका नाम जसंवत रखा जब ये दस वर्ष के तब इनकी सगाई सम्बन्ध चूलीखेड़ा (हरियाणा) ग्राम के निवासी नेपाल जी बेनिवाल की पुत्री काललदे के साथ हो गयी परन्तु इन्होंने विवाह से पहले ही साधना मार्ग को अपना लिया। सिद्ध जसनाथ जी की शिक्षा के बारे में कोई स्पष्ट विवरण उपलब्ध नहीं है और ना ही इनके दीक्षा गुरू के बारे में पता चलता है जसनाथ जी ने गौरखमालिया नामक स्थान पर 12 वर्ष तक तप किया एवं अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों का जीवदया तथा आतम चिंतन का उपदेश दिया। जिसमें बमलू गांव के हारोजी व लालमदेसर के जियोजी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। सिद्ध जसनाथ जी ने लोहापागंला नामक तान्त्रिक का अभियान चूर किया था। इन्होंने राव लूणकरण को बीकानेर राज्य की गद्दी प्राप्ति का वरदान भी

दिया तथा राव धडसी का अभिमान चूर कर उसे ज्ञान प्राप्ति का उपदेश दिया। इन्होंने सर्वप्रथम सारण चौधरी को धर्मों पदेश भी दिया था जिसमें धर्म पालन के 36 नियम बताये थे। सिद्ध जसनाथ जी ने ईश्वर, सृष्टि, संसार, मोक्ष, कर्म आदि पर अपने विचार प्रकट किये तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु इन्होंने निगुर्ण ओर निराकार ईश्वर की उपासना करने पर बल दिया। सृष्टि उत्पति के सम्बन्ध में इनका कहना है कि सर्वप्रथम निराकार ओंकार था उससे ईश्वर साकार हुए। उन्होंने प्रथम आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी इन पांच तत्वों को प्रकट किया। उसके पश्चात चन्द्रमा, सूर्य, ब्रहा, महादेव व आधारशक्ति का सृजन किया और उसके पश्चात समस्त सृष्टि का निर्माण हुआ। सिद्ध जसनाथ जी का कर्मवाद पर पूरा विश्वास था इस सम्बबन्ध में उनका कहना है कि हे प्राणी तुझे निश्चित ही अपनी करनी का फल भोगना पड़ेगा इसलिए तू भूलकर भी उस परम पिता परमात्मा को दोष मत देना क्योंकि तेरे किये कर्म ही तेरे सामने आयेंगें। मोक्ष प्राप्ति के लिए जसनाथ जी ने गुरू के निर्देशन को अनिवार्य माना है। इस सम्बन्ध में उनका कहना है कि गुरूदेव के वचनों का पालन करने से पापों का अन्त हो जाता है और तत्व–ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। साधाना पद्धति के अन्तर्गत जसनाथ जी ने ईश्वर का नाम–स्मरण और योग साधना पर बल दिया और इन्हें ईश्वर प्राप्ति का साधन बताया। सिद्ध जसनाथ जी एक ईश्वर में विश्वास रखते थे और मूर्तिपूजा के विरोधी थे उन्होंने समाज के नैतिक स्तर को ऊपर उठाने के लिए व्यक्ति के आचरण की शुद्धता पर बल दिया। उन्होंने समाज सुधार के लिए अपने अनुयायियों के लिए 36 नियम प्रतिपादित किये थे जिसका पालन करना अनुयायियों के लिए अनिवार्य किया था जो निम्न प्रकार से हैं :–

1. उत्तम कार्य करना 2. ऐसे मार्ग पर चलना जिससे स्वधर्म का पालन हो 3. भूखे मरने पर भी किसी जीव का भक्षण ना करना 4. उत्तम तथा स्वच्छ ढंग से माथे पर केश रखना 5. प्रात काल स्नान करने के उपरान्त ही भोजन करना 6. शील धर्म का पालन करना सदाचार तथा संयम रखना 7. प्रात व सांय काल में संध्या एवं ईश्वर का चिंतन करना 8. अग्नि पूजा के साथ होम जाप (हवन) करना 9. आपदेव की पूजा अराधना ना करना अर्थात एक ईश्वर के अतिरिक्त भैरव, भोमिया पितर, पीर, भूत–प्रेतादि कल्पित देवों की पूजा ना करना 10. उचिछष्ट मुख से अग्नि में फूक ना मारना 11.दुध तथा पानी को वस्त्र से छानकर परना 12. प्रत्येक स्थिति में जीव की रक्षा करना 13. राम गुणगान व शिव का चित में ध्यान करना 14. मोक्ष प्राप्ति का मार्ग ढूंढ़ना 15. कन्या विक्रय न करना, कन्य का धर्म विवाह करना 16. ब्याज प्रतिब्याज ना लेना 17. गुरू द्वारा दीक्षित होना, गुरू से स्वधर्म की दीक्षा लेना 18. आय का बीसवां हिस्सा परमार्थ में व्यय करना 19. हुक्का, चिलम, बीड़ी, तम्बाकु, भांग व लहसुन का सेवन ना करना 20. साटियों से सौदा ना करना अर्थात उनसे पशु आदि का आदान प्रदान ना करना 21. वन्य प्राणी हरिण आदि पशु पक्षियों की रक्षा करना 22. बैल–बछड़ों को बधिया (खस्सी) व सूईसार ना करवाना 23. मन में दया भाव रखना 24. पशु–शालाऐं बनवाकर गाय, बकरे तथा मींडे की कसाई के हाथों से रक्षा करना 25. अतिथि का सत्कार करना 26. व्यर्थ का वाद–विवाद ना करना 27. मन, वचन सये किसी की निन्दा ना करना तथा कपट व परस्त्रीगमन का परित्याग करना 28. चोरी–जारी दुष्कर्मों का मन, वचन और कर्म से त्याग करना 29. रजस्वला स्त्री को पांच दिन तक अस्पृश्य मानना 30. मदीपान ना करना 31. मास ना खाना 32. जन्म और मरण पर 10 दिन तक सूतक मानना 33. कुल निन्दा ना करना 34. दुराचारियों की संगती से बचना 35. आसन में नियम से पक्षियों को चुग्गा–पानी देना 36. जसनाथ जी के अनुसार मृतक को पुण्य भूमि में समाधी देनी चाहिए उन्होंने अंतिम संस्कार के लिए भूमि–समाधि को उत्तम माना है।

इस प्रकार सिद्ध जसनाथ जी ने समाज के नैतिक स्तर को ऊपर उठाने के लिए एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए अपने अनुयायियों के लिए 36 नियम निर्धारित किये तथा जसनाथी संप्रदायी की विधिवत स्थापना की तथा उन्होंने लालमदेसर मगेरे वाला (बीकानेर) के चौधरी रामजी सारण को सम्प्रदाय में सर्वप्रथम दीक्षित किया तथा उसे ही सर्वप्रथम 36 धर्म नियमों का उपदेश दिया उसके पश्चात बहुत से लोगों (जाटों) ने जसनाथी सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की। अन्त में वि. सवंत 1563 की अश्विन शुक्ल सप्तमी शुक्रवार को सिद्ध जसनाथ जी ने समस्त सेवक समुदाय को यथोचित आदेश देकर 24 वर्ष की अवस्था में ही गांव कतरियासर (बीकानेर) में जीवित समाधी ले ली। कुछ समय बाद इनकी अविवाहित पत्नी काललदे ने भी कतरियासर से पूर्व की ओर एक मील दूर जीवित समाधि ले ली, जहां पर इन दोनों महान आत्माओं की बॉडी बनी हुई है। इस सम्प्रदाय की प्रमुख गद्दी कतरियासर गांव में है। जसनाथ जी के समाधि लेने के पश्चात इनके प्रमुख शिष्य जागोजी इस गद्दी पर बैठे इस तरह जसनाथ जी के पूनरासर में, टोडर जी ने मालासर में तथा बोयत जी ने पाचलां सिद्ध में अपने स्थान (पीठ) स्थापित किये जो इस सम्प्रदाय की उप–पीठे कहलाती है। इस प्रकार जसनाथी सम्प्रदाय की प्रधान पीठ कतरियासर में तथा 5 पीठे उपरोक्त स्थानों पर है जो इन पीठों की गद्दी पर बैठते हैं। वे सिद्ध कहलाते है इसके अलावा इस सम्प्रदाय में 84 बाडियां प्रसिद्ध है। जो अलग–अलग स्थानों पर बनी हुई है। इस सम्प्रदाय को मानने वाले दो प्रकार के लोग है। पहला वर्ग 'सिद्ध' नाम से पुकारा जाता है तथा दूसरे वर्ग में जसनाथी जाट कहलाते है। इन दोनों वर्गों की मानरूता और धर्म पालन की परिपाटी एक सी है सिद्ध वर्ग के लोग सिर पर भगवे रंग की पगड़ी बाधते हैं तथा जसनाथी मन्दिरों की पूजा–अर्चना का कार्य सम्भालते है। जसनाथी जाट साधारण वेशभूषा में ही रहते है। इस सम्प्रदाय के अनुयायी अधिकांश जाट ही है तथा इस सम्प्रदाय में कतरियासर (बीकानेर जनपद में) ग्राम जसनाथ्ज्ञियों का मुख्य धाम है तथा वहां पर स्थित बाफडी, गोरखमालिया और तालाब को पुण्य भूमि का महत्व देकर उन स्थानों की यात्रा मंगलकारी मानी जाती है। यहां पर साल में तीन बार अश्विन शुक्ला सप्तमी और चतुर्थी, चैत्र शुक्ल सप्तमी और चतुर्थी तथा माघ शुक्ला सप्तमी और चतुर्थी को बड़े मेले लगते है तथा जसनाथी यहां आकर सिद्ध जसनाथ जी व सती माता काललदे की समाधि पर धोक मारते है इस दौरान प्रात काल से सांयकाल तक धृत मिश्रित सुगान्धित द्रव्यों का हवन होता रहता है और रात को जागरण व अग्नि नृत्य धूमधाम से किया जाता है। प्रत्येक जसनाथी के लिए कतरियासर गठ जोड़े की यात्राा करनी अनिवार्य होती है। आज भी अपने धर्म (सम्प्रदाय) का पालन करते हुए देखे जा सकते है इस सम्प्रदाय के अनुयायी अधिकांश जाट ही है जो जसनाथी जाट कहलाते है जसनाथी जाटों व गैर जसनाथी जाटों के सामाजिक सम्बन्धों में कोई रूकावट नहीं है तथा आज भी दनमें वैवाहिक सम्बन्ध तथा रिश्तेदारियां बहुत मजबूती से कायम है। सिद्ध जसनाथ जी द्वारा दिखाये गये मार्ग व नियमों का पालन करके प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है। सिद्ध जसनाथ जी जाट समाज से सम्बन्धित होना समस्त जाट समाज के लिए गौरव की बात है।

जय जाट

I rchj flag /ku[kM

हमें गर्व है कि हम है जाट,
न्यायप्रिय, सघंर्षशील और दयालू होता है जाट
J से Justice (न्याय) के लिए,
A से Action (सघंर्ष) करता है जाट,
T से Truth सच्चाई के लिए, आखिरी दम तक लड़ता है जाट,
हमें गर्व है कि हम है जाट! न्यायप्रिय संघर्षशील..................

भारत की रक्षा करती,
बार्डर पर रजमैन्ट जाट,
दुश्मनों के छक्के छुड़ाने वाले,
परमवीर चक्र विजेता थे शहिद ब्रिगेडियर होशियार सिंह
जाट, एक मात्र परमवीर चक्र विजेता जीवित
वो भी है मेजर होशियार सिंह सिसाने के जाट,
भारत की रक्षा की कमान सम्भाल रहे,
जनरल दलवीर सिंह सिहाग भी है जाट,
हमें गर्व है कि हम है जाट, न्यायप्रिय, सघंर्षशील.........

एशियाड, कामनवेल्थ गेम हो या ओलम्पीक,
मैडलों के ढ़ेर लगाते है जाट,
सारा भारत एक तरफ और एक तरफ है अकेला जाट,
क्रिकेट के मैदान में भूचाल आ जाये,
जब खेले विरेन्द्र सहवाग जाट,
चन्दगी राम व सतपाल महाबली हुए,
अब ग्लासगो (U.K) 2014 कामनवैल्थ में डंका बजा रहे,
विजेन्द्र सिंह व सुशील कुमार जाट
हमें गर्व है कि हम है जाट, न्यायप्रिय, संघर्षशील...........

प्रधानमंत्री चौ. चरणसिंह व उप–प्रधानमंत्री चौ. देवीलाल ग्रह
मन्त्री, लोकसभा अध्यक्ष व मुख्यमन्त्री बने है जाट न्यायधीश
और रक्षा मन्त्री तो पैदायशी होते हैं जाट
हमें गर्व है कि हम है जाट, न्यायप्रिय, संघर्षशील................

छोटा नौकर हो या मुखिया,
जाट से कटते हैं कुछ नकली जाट
इसी कमी में अरज बन्द है पिंजरे में एक शेर जाट,
जब पिंजरे से दहाड़ लगाता,
बड़े–बड़ों की नींद उड़ा दे खड़ी कर देता है खाट।
पिंजरा खुलने में देर नहीं है बस थोड़ी सी देखो बाट,
हमें गर्व हे कि हम है जाट, न्यायप्रिय, सघंर्षशील आरै.........

फाईल पर कभी J लिखा जाता था।
तब प्रमोशन व नौकरी से कट जाता था जाट,
Justice होना जब बन्द हुआ Action पर उतर आया जाट,
Truth पर चल कर आरक्षण लिया,
J लिखने वालों का गया, बंट बाज।
एक ने धर्म बदल कर जान बचाई
Dy-CM. के पद की इज्जत को कर दिया बाराबाट
दुसरे ने B.J.P की खाट तोड़ दी फिर भी घर का रहा न घाट
जाटों से टकराने वालों का हो जाता है सुफड़ा साफ,
हमें गर्व है कि हम है जाट, न्यायप्रिय, सघंर्षशील............

हरियाणा पुलिस के पद के मुखिया पर रहकर पुलिस भर्ती
की लादी बाढ़ फिर जाट सभा को चार चांद लगाए।
जिस पर जाटों को गर्व है, वो है आई.पी.एस. (रिटायर्ड)
डा. महेन्द्र सिंह मलिक जाट, हमें गर्व है कि हम है जाट,
न्यायप्रिय, संघर्षशील और दयालू।

सारी दुनिया भारत से कटती
हरियाणा से कटता सारा भारत,
हरियाणा में सोनीपत से कटते
सोनीपत में सब जिससे कटते, वो सरीफ जात जाट,
ऊपर से नीचें ते कटता–2 कट रहा
फिर भी नहीं घबराता है जाट
लंदन (U.K) में बैठा कविता लिख रहा
सतबीर सिंह धनखड़ सोनीपत का जाट
हमें गर्व है कि हम है जाट, न्यायप्रीय, सघंर्षशील और दयालू
होता है जाट

जय–जाट

जीवन में सुखी व दुखी होने के कारण

Jherh n'kuk noh jktu

पहले सुख को तलाशें और निम्न दस नियम अपनाएँ

1. **काम में सदैव व्यस्त रहना।**
2. **कम से कम बोलना।**
3. **बिना बोले सोचना**
4. **अपनी गलती स्वीकार करना।**
5. **पहले लिखना बाद में देना।**
6. **व्यवहारिक व सांसरिक बनना।**
7. **राय सब की लेना, निर्णय अपना लेना।**
8. **सबका सम्मान करना।**
9. **बिना जरूरत खरीददारी न करना।**
10. **पहले सोचना, पीछे बोलना**

दुखी रहने के दस कारण

1. **देर से सोना, देर से उठना।,**
2. **लेन–देन का हिसाब न रखना।**
3. **किसी के लिउ कुछ न करना।**
4. **हमेशा अपने लिए ही सोचना।**
5. **अपनी ही बात को सत्य मानना।**
6. **किसी का भी विश्वास न करना।**
7. **बिना कारण झूठ बोलना।**
8. **कोई भी काम समय पर नहीं करना।**
9. **बिना मांगे सलाह देना।**
10. **भूतकाल के सुख याद करना।**

अनुशासन ही जीवन में सब कुछ दिलाता है। पाठकों अनुशासित हो जाओ सुखी जीवन बिताओ।

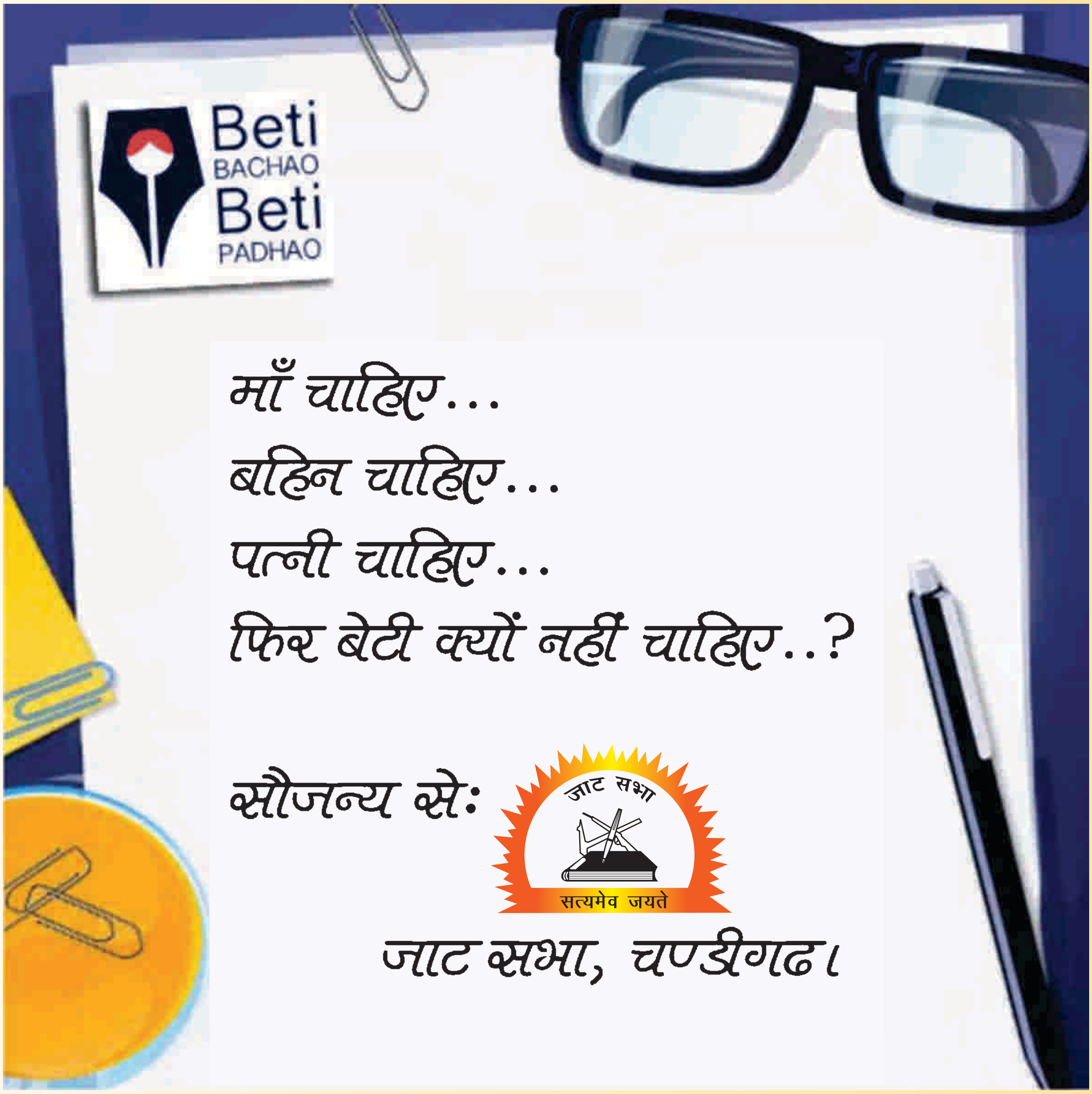

We Are Proud of

Ms. Dinaz Malik daughter of Col. Dalbir Singh Malik and Mrs. Rammi Malik, life member of Jat Sabha Chandigarh/Panchkula & a student of Computer Science & Engineering of P.E.C University of Technology was selected from her campus for 6 months internship at American Express in her 3rd year of Engineering. During these 6 months she was made to work in the American Express Technology field where she maintained the banking software of the Company. Impressed by her hard work and performance over this course, the Company gave her a "Pre-Placement Order" which meant that they had now officially hired her as an Employee. She will join American Express after her graduation is completed in June, 2015.

All the members of Jat Sabha Chandigarh/Panchkula congratulate Dinaz Malik for her grand success and pray to Almighty God for her continuous sublime success and a bright career in all time to come as well.

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।